लक्ष्मी जी पृथ्वी पर

डॉ मधुबाला गुप्ता
भोपाल (म प्र)

सस्करण : प्रथम १९५९
मूल्य तीस रुपए
प्रकाशक विद्या विहार
106/154 गांधीनगर
कानपुर–12

LAXIMI JI PATHVI PAR

—Dr Madhu Bala Gupta

Rs , 30 00

पूज्य
माता जी
को
सादर
समर्पित

१

काँटो का साथ

पूस माम की रात्रि का प्रथम प्रहर था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। वातावरण निस्तब्ध था, चारों ओर गहरा अंधकार छाया था। सन सन करती तेज ठंडी हवायें चल रही थी। इस समय लड़खड़ाता, गुनगुनाता, कुछ गुनगुनाता, अपने में मस्त भीखू सुनसान सड़क से अपनी झोपड़ पट्टी की ओर लौट रहा था। दुबले शरीर पर वस्त्रों के नाम पर एक फटा पुराना कुर्ता और एक मैली धोती थी। धोती लम्बाई में छोटी होने के कारण केवल घुटनों को ही ढक पा रही थी। ये वस्त्र ग्रीष्म ऋतु के लिये उपयुक्त थे, लेकिन सर्दी के लिये उचित न थे। सच्चे अर्थो में यह पहनावा उसकी दरिद्रता को प्रकट कर रहा था।

झोपड़ी के पास आ दरवाजे को जोर जोर से भड़भड़ाने लगा। थोड़ी देर तक जब वह नहीं खुला तब जोर जोर से चीखने चिल्लाने लगा।

"साले—अभी—से—सो—गये कोई— सुनता— ही—नहीं।"

"सब साले—अपने को—मुर्दा—मजदूरी—समझत—है।"

"जब—जी—चाहे—जिसको—निकालो जिसको रख—लो।"

"आज—मैं—अन्दर—जाईके—रहूँगा।"

"मैं—कहीं—नहीं—जाऊँगा।"

मैं—नहीं—निकलूँगा।"

यह कहते भीखू दरवाजे में लात घूँस मारने लगा। अब तक आस पास की झोपड़ पट्टी के सोये मजदूर भी जाग गये थे। उन्हें भीखू का फिल्मी

अन्दाज स बालना बहुत ही सुखद लग रहा था। ठड की अधिकता के कारण वे सभी गुदडी, कम्बल ओढे अपने स्थान पर बैठे बैठे इस नाटक को देख रहे थे।

रधिया जो पति का इ तजार करत-करते अभी खा-पीकर लेटी थी। दिन भर मेहनत मजदूरी करने के बाद उसका सारा अग टूट रहा था। बहुत थक जाने के कारण लेटते ही नीद लग गई। यह उसकी पहली और गहरी नीद थी।

खट खट खट खट–की आवाज से वह भयभीत हो गई। आने वाले सकट को समझ उसका रोम राम कांपने लगा। अब अजीब पशो पेश म पड गई 'खालू या नही।' खोलने पर पति का वही दैनिक काय "मार–पीट, गाली–गलौज धक्का–मुक्की ।"

बाहर स आ रहा तेज स्वर "रधिया ! ओ रधिया–खोलत नाही ।"

"हरामजादी—खोल ।"

रधिया जो अभी तक जडवत सी खडी थी, कुछ निणय नही ले पा रही थी। दरवाजे का टूटते देख उसने समझ लिया कि पूरा टूटने पर सारी रात उसे ठडी तज हवाओ का सामना करना हागा। जल्दी ही कुछ निणय ले साकल का खाल दिया। सामने काल सदश पति को देख वह पीछे का हटी, किन्तु तब तक पति की लात के आघात से वह जमीन पर गिर पडी। अब भीखू न अन्दर आ रधिया की रोज से भी अधिक पिटाई की वह चीखती चिल्लाती रही, लेकिन कोई उस बचाने नही आया। आता कौन ? यह ता उसका रोज का काम था।

इस शोर शराबे से उसकी ३ वष की रमिया और ४ माह की रज्जो भी अब तक जगकर जोर जोर से राने लगी। सारी झोपडी म रोने का कोलाहल भर गया। बेचारी रधिया। लाचार रधिया। लाख कोशिश करन के बाद भी न उठ सकी। मूक पशु की भाँति अपने स्थान पर ही पडी अपने भाग्य का कोस रही थी जो उसे भीखू जैसा पति मिला।

दीपक की रोशनी म द पडती जा रही थी, शायद उसम तेल की कमी थी।

रधिया और रज्जो भी रो रो कर थक गई थीं। रधिया ने अपने ध्यान से समझ लिया कि वे अब सो गई होंगी। भीखू भी चारपाई पर कम्बल ओढे खर्राटे ले रहा था, किन्तु रधिया जमीन पर लेटी अपनी किस्मत पर आंसू बहा रही थी।

इस समय रधिया का अम्मा-बप्पा की याद आने लगी और वह जोर से रो पडी। अब उसने समझ लिया कि "रोने से भी क्या लाभ ? उसके परिवार मे दो बहिनें और एक भाई था। बडी बहिन भी ससुराल म अपने अच्छे दिन बिता रही हैं। उसके भी तीन बच्चे हैं। उसका भी आदमी है, जो मारना तो दूर कभी उसे डाँटता भी नही। भाई भी मजे म है। वह भी अपनी औरत को पीडित नही करता। उसके सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखता है। एक मैं ।" मेरा विवाह भी तो अच्छे परिवार म हुआ था जहाँ खेती बाडी थी।

मैं जब दूसरी बार मायके से आई तब मुझे ज्ञात हुआ, कि मेरा आदमी मजदूर है। जितने रुपये मिलते हैं उनके आधे की शराब पी जाता है इसी से तग आकर माँ जी ने घर से निकाल दिया। यह जानकर कितना दुख हुआ था, उसे ऐसा लगा कि वह आसमान से धरती पर आ गिरी हो। तभी से उसने समझ लिया था कि अब उसका जीवन सघषमय है। उसने कितना प्रयत्न किया कि वह सुधर जाए, लेकिन उसके साथी उसे सुधारने को तैयार नही थे। उसके बिना वह अपने को असहाय समझते थे। इसी कारण हर समय उसके इद-गिद मडराते रहते थ।

रधिया को याद है, उसका वो साथी 'रामू' जो हर वक्त इसके साथ छाया की तरह चिपका रहता था। उसकी बेहूदी हरकतो से तग आ एक दिन उसने उस को झाडा था, कि उसके बाद उसका इस झोपडी म आना बद हो गया। रामू से तो छुटकारा मिल गया किन्तु आदमी की ज्यादती बढ गई। तब से अभी तक उसी का फल भोग रही हूँ।

विचारों म गोते खाते रधिया ने अब एक दृढ सकल्प कर लिया, एक निणय ले लिया, कि वह पति नाम के इस जानवर के साथ कदापि नही रहेगी। बहुत सहा, अब न सहेगी। यहाँ भी मजूरी करती हूँ, अलग रहने

पर भी करूँगी। अपनी दोना बच्चियों के जीवन को इस नरक से बचाऊँगी। जिसे आज तक पति माना उसने यातनाओं के सिवा क्या दिया ? शरीर पर अनेक उपहार। सवेरा होने ही वाला था। सुबह के शायद ७ बजे होंगे। ऐसा सोच रधिया दैवी प्रेरणा के वशीभूत झट से उठ बैठी। शरीर से चोट खाई रधिया, किन्तु आत्मा से प्रसन्न उत्साहित रधिया। हाथ मे बाल्टी ले पानी भरने चल दी। अपने हाथ पैर मुँह धोकर दूसरे कपडे पहन रोज की तरह तैयार हो गई। दोना बच्चों को भी कुछ खिला पिला कर तैयार किया। सामान की एक पोटली बनाकर सिर पर रखी, रज्जो को गोद मे लिया और रमिया की उँगली पकड किसी साहसी योद्धा की भाँति जीवन के रणक्षेत्र म अकेली निकल पडी।

अभी तक भीखू दुनिया से बेखबर घोडे बेच सोया हुआ था। वैसे भी वह देर से उठता था। सारा काम कर लेने के बाद रधिया ही उसे उठाती थी। सुबह के १२ बज चुके थे। उसके सभी साथी मजूरी के लिए जा चुके थे। वो अभी तक सोया था, नींद खुली तो पाया उसके सिवा झोपडी म कोई न था। सोचा, वह नाराज हो मजूरी को गई होगी। उठकर देखा तो बहुत सी वस्तुयें नदारद। उसका माथा ठनका। गुस्सा आया। बहुत सी गालियाँ दी। क्रोध के आवेग म वह भी चल दिया।

साले की झोपडी के बाहर औरत को बैठा देख उबल पडा। गालियों की झडी लगा दी। शोर सुन साला और उसकी औरत बाहर आये। भीखू को डाँटा फटकारा। दोनो ओर से झगडा होने लगा। अब तक आस पास मजमा इकट्ठा हो गया था। सभी रधिया का ही पक्ष ले रहे थे और भीखू को भला बुरा कह रहे थे। बहुत देर झगडे के बाद सभी ने निर्णय रधिया के ऊपर छोड दिया। सभी का आदमी के प्रति उपेक्षित व्यवहार देख रधिया का कोमल हृदय पसीज उठा। उसका मन चक्रवात की तरह उलझन मे पड गया। वह कुछ निर्णय न ले सकी कुछ कह न सकी। भाई के स्वर को सुन चौंकी–रधिया ! बोल ने इस आदमी से ! तू क्या चाहती है ?"

"वह बड धर्म संकट म पड गई, क्या करे ? सभी के सामने अपने मरद

की 'इनसट' कैस करे ?" वही वह अभी सोच ही रही थी कि क्या कह ? इसी बीच आदमी का भद्दी भद्दी गालियाँ बकन देग उसका स्वाभिमान जाग उउठा। रात का दृश्य उसकी आखा म घूमने लगा। वह बोली—

"अब मैं इस आदमी के साथ नहीं जाऊँगी।

ये आदमी नही कसाई है, कसाई।"

ये सुन आदमी बहुत गरजा तरगा, कि तु अकेला हाने के कारण कुछ न कर सका। वहाँ स भागा म ही उसे अच्छाई नजर आई।

अब रधिया ने अपन आपका भाग्य के सहार छोड मजूरी करना शुरू कर दिया। भाई के पास ही छोटी सी झोपडी बना अलग रहने लगी। बहुत सी छोटी बडी कठिनाइया आयी, उसन हँसते रोते स्वागत किया। अकेली, बेचारी, पति की त्यागी, समय की मारी क्या करे ? गरीबी की मार से, रुपया के अभाव मे अपनी बच्ची रज्जा का न बचा सकी। उसे इस बात का सबसे अधिक दु ख था। सभी समय की गति के साथ उसका साथ छोडते जा रहे थे। शेष रह गई रधिया और उसकी पुत्री रमिया।

शक्ति और सामथ्य स अधिक मह्नत के कारण थाडे समय म ही वह बीमार रहन लगी। अब उससे मजूरी का काम करना भी असम्भव हा गया था। अधिक सा्ना राने स रधिया का मन कु ठाग्रस्त हा गया था। थोडा सा बोझा उठाने पर ही सास धाकनी की तरह चलती थी। सरकारी अस्पताल म न जान कितनी बार वह गई थी। डॉक्टर बार बार यही कहते थ— "बोझा उठाना ब द करो ! दूध फल खाओ ! शरीर म खून नहीं ?" अगर ऐसी ही स्थिति रही तब थाडे दिना म टी० बी० का शिकार हा जाओग ?"

क्या खाय ? क्या बच्ची का खिलाय पढ़ाय ? कहाँ स लाय रुपया ? आदमी तो शराबी निकला, जिसन सारा जीवन तबाह कर दिया। अब शरीर भी कितना कमजोर हा गया है। हड्डियाँ ही हड्डिया दिखाई दती हैं। अम्मा-बप्पा के यहाँ थी, तब भी महनत मजूरी की। शादी के बाद ये दिन देखने पड़े।

"भगवान ने मेरी किस्मत मे ही काँटे ही काँटे भरे ।"

'अब तो दद से गहरा रिश्ता बन गया ।"

"जीवन म रोना ही रोना रह गया, हँसी न जान कहाँ गुम हो गई। जी म आया क्या न इस जि दगी से मौत भली ?"

'बडी रम्मो को देख वह शा त हो गई। उसे जीना है, अपने लिये नहा बच्चो के लिये ।"

'कितनी छाटी है, वह अभी। कसे तुच्छ विचार आते है उसके मन म।'

लकिन वो, क्या कर ? परिस्थितियाँ ही एसी ।"

अब रम्मो भी तो बडी हो गई है। उसकी शादी करनी है, जितनी जल्दी हो सके। शरीर तो अच्छा रहता नहा, जीवन का कोई भरोसा नही। डाक्टरो ने साफ साफ कह दिया है—"बीमारी अधिक बढ गई है, अभी भी ध्यान नहीं दिया तो अधिक समय तक नहीं रह सकती।" जल्दी ही अच्छा लडका देख उसके हाथ पीले कर दती हूँ। सभी से कह ती रहती ह। "लडका को अच्छी तरह जाच परख कर ही शादी करूँगी। नही तो लडकी सारी जिदगी अम्मा को कोसती रहेगी। बाप तो जिम्मेदारी निभा न पाया। न जाने क्या करता होगा ? निगोडा ।'

रधिया के मन के एक कोने म प्रिय मिलन की आस अभी छिपी थी। उसे अभी तक यह विश्वास था कि कुछ अरसे बाद उसमे जरूर परिवतन होगा, वह कभी न कभी उसके पास लहर आयेगा, उसे मनायगा, माफी मागेगा ।"

"लेकिन वो, कितना निष्ठुर निकला। मरे न सही अपनी बच्चो के बहाने आता। अपनी बच्ची रज्जो के बारे मे पूछता। मैं उसे सब बताती। बताने से मेरे दिल का कुछ बोझ कम हो जाता।'

सारे शहर म वायरस फ्लू फला हुआ था, जिसने महामारी का रूप ले लिया था। यह फ्लू अमीरो की अपेक्षा गरीबो म अधिक फैला था, जिसने रधिया को पकड़ लिया। रमिया भी अब समझती थी या परिस्थितियो ने

उसे सब समझा दिया था। अस्पताल से दवा लाती, अम्मा को खिलाती, खाना बनाती, कपड़े धोती अम्मा तो ठीक हो गई, किंतु स्वयं जकड़ गई। कमजोर माँ ने लाख प्रयत्न किये कि बच्चों किसी तरह अच्छी हो जाए, संभव न हुआ। जमा रुपये-पैसे भी सब कब के खत्म हो चुके थे। उधारी में काम चल रहा था। मुफ्त की दवा असर ही नहीं कर रही थी। प्राइवेट डॉक्टरों की फीस कहाँ से लाय वो? दिनों दिन रम्मो की हालत गिरती जा रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कि वह क्या करें? एक तो खुद बीमारी की मारी । कोई नहीं देखता उसकी लड़की को। सब नाते रिश्ते रुपयों से बने हैं।

दो-तीन दिनों से कुछ नहीं खाया उसने। इच्छा ही नहीं होती, ऊपर से बच्चों की बीमारी।

"कितने दुःख देगा भगवान, अब ।"

"मेरी रम्मो को अच्छा कर दो भगवान ।"

यह प्रार्थना सोते जागते, करती रहती थी, किंतु कुछ काम न आई।

रधिया सारी रात बेटी के सिरहाने बैठी रहती थी लेटी रहती थी रोती रहती थी। रात में कई बार उठकर बुखार को देखा करती।

एक काली भयानक रात को उसकी नींद जा लगी, तो वह सूर्य निकल आने के बाद ही खुली। देखा तो दंग रह गई। रम्मो की आँखें खुली तथा पुतलियाँ फैली हुई थीं। मुख पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। झट नब्ज टटोला। हृदय पर हाथ रखा, किंतु कुछ हलचल मालूम न हुई। रधिया ने समझ लिया कि वह भी अपना अम्मा को अकेला छोड़ लम्बी यात्रा पर जा चुकी है। यह देख वह चीख पड़ी--"नहीं नहीं ।" उसकी दर्द नाक चीखें भोर के समय झोपड़ी के अंदर गूँज रही थी--

"रमिया ऽऽऽ आ ऽऽऽ रमिया ऽऽऽऽ।"

२
नौकरी

थका हारा रवि जब सध्या समय घर लौटा, तब सूरज ढल चुका था, सध्या होने वाली थी। पक्षी समूह के साथ अपने अपने घोसला की ओर लौट रहे थे। बेटे को आया देख माँ ने पूछा–

'बेटा ! नौकरी मिली।'

यह सुनते ही रवि के सारे अगो मे बिजली सी दौड गयी। वह काठ के पुतले सदृश खडा रह गया। उसकी यह दशा देख मा को समझने मे देर न लगी। मन दुखी हो गया। वह जमाने भर को कोसने लगी क्योकि आज उनकी आत्मा पीडा म भर गई थी तग आ गई वह इस गरीबी से। मन म तो कई बार प्राणान्त करने का विचार भी आया कि हमेशा हमेशा के लिए जीवन से छुटकारा पा लें, किन्तु इन्द्रा, पकज और प्रभा की तरफ ध्यान जाते ही उनकी ममता जाग उठी। वह आने वाले कल के बारे मे सोचने लगी "अगर मैंने ऐसा कुछ कर लिया तब इन अभागे बच्चो का क्या होगा ? यह कैसे अपना जीवनयापन करेंगे ? क्या समाज मेरे इस किये काय की सजा इन बेगुनाहो को नही देगा ? क्या, ये मासूम बच्चे अपनी मा को माफ कर पायेंगे ? नही नही, एसा मुझे कुछ नही करना चाहिये जिससे हमारी मान प्रतिष्ठा मे किसी भी प्रकार का दाग लग जाये छि, यह कैसा घिनौना विचार आया, मुझे ऐसा कभी नही सोचना चाहिये।"

तभी उसका ध्यान रवि की ओर गया जो अभी तक खडा था। यह देख उन्हे अपने ऊपर झुंझलाहट होने लगी। स्नेह से बोली–

"रवि ! तू अभी तक खडा क्यो है, बैठा जा, पास आ, यहाँ बैठ। निराश न होना, जीवन से हार न मानना। बेटा ! तू चिन्ता न कर एक दिन तेरी ऊँची नौकरी जरूर लगेगी, और तू अफसर बनेगा। "

यह कष्टा के दिन तो थोड़े दिना के हैं, फिर सब ठीक हो जायगा। मानव का प्रयत्न करना चाहिए, फल देना तो भगवान क हाथ है।"

माँ के मधुर वचन सुनते ही रवि की आँखे भर आई और वह बोला—

"माँ पिताजी का मरे आज छ माह बीत गय। इन छै महीनों म म कहा कहा नही घूमा! सिवाय धक्के खाने स मुझे क्या मिला? यहा तक कि मेरे जूते घिस गये, फिर भी कोई फल नही निकला। मैंने बी एस सी प्रथम श्रेणी म विशेष योग्यता लेकर पास किया फिर भी कोई फायदा नही। हमस ता अनपढ लोग अच्छे जो पेट पालने के लिए कोई भी छोटा मोटा धन्धा कर लेते है। गरीबी सबसे बुरी है 'माँ'।" यह कहते कहते उसका गला भर आया कुछ देर रुककर फिर बोला मैं जहाँ भी गया हूँ वहा के अधिकारी यह ही पूछते हैं—

"मिस्टर रवि! इससे पहले कहा नौकरी करते थे? कितने वर्षों का अनुभव है?"

जब मैं उन्हे अपनी पढाई, उम्र और परिस्थिति बतलाता हूँ, तो वे यही कहते है—

'आई एम सारी, रवि! हमे तो किसी अनुभवी व्यक्ति की जरूरत थी।"

माँ! उन्हे किसी के परिवार और उसकी मुसीबता से क्या मतलब।

मैं निराश हो गया 'माँ' कहते कहते उसकी आखा से जल की धारा बह निकली माँ, जो अभी तक उसे दिलासा दे रही थी, वह भी अत्यन्त दुखी हो गई। उनके धैर्य का बाँध टूट गया और नेत्रा म बरबस आँसू निकल आये। आसुआ को धोती से बार बार हटाती हिम्मत के साथ बोली—

"बेटा! तू दुखी मत हो भगवान न्यायी है, अन्यायी नहीं। लगता है भगवान हमारी परीक्षा ले रहा है। अगर तू हिम्मत खो देगा तो इस परिवार का बोझ कौन उठायगा! पगला! धैर्य रख! देख तुझे बडी नौकरी मिलने वाली है। इसी कारण इतनी देर हो रही है"

माँ की बात सुनते ही रवि चौंक उठा और बोला "बड़ी नौकरी भी मिल जाय, लेकिन उसके लिए पाँच हजार चाहिए।'

"पाँच हजार रुपय" किस लिए ?

"रिश्वत के लिए, माँ" कहते हुये उसका सिर नीचे की ओर झुक गया

मा ने कहा—"बेटा ! तुझसे कौन कह रहा था, कि रुपये देने से नौकरी मिल जायेगी ?"

"हाँ, माँ ," मैं एक आफिस में गया था। अन्दर से जब बाहर निकल रहा था, तभी आफिस का एक व्यक्ति मेरे साथ ही बाहर आया और बोला

"क्यों परेशान दिखलाई देते हो ? कितना पास किया है ? नौकरी चाहते हो ?'

"नौकरी का नाम सुनते ही मैं चौंक पड़ा। मन प्रसन्न हो गया। मैंने उसे नमस्ते की और सब कुछ बतला दिया।" तब वह बोला

"देखो रवि ! मैंने अभी तक तुम जैसे लोगों का ही भला किया है। उन्हें नौकरियाँ दिलवाई हैं, ऊँचे ओहदों पर बिठाया है जितना मुमकिन हो सकता है, उतना मैं करता हूँ बाद में रही तुम्हारी किस्मत।"

वह मुझे पास ही कन्टीन में ले गया। चाय पिलाई। तब मैंने पूछा—

"आपका नाम !"

बोला—"मुफ्तान द सेंगर "

मा ! उसके पहनावे और बोल्चाल के ढंग से लगता था कि वह किसी ऊँचे पद पर है। इसलिए मैंने पूछा—

"आप कहाँ नौकरी करते हैं ?"

बोला—"तुझे इन सब बातों से क्या लेना देना कि मैं कहा नौकरी करता हूँ, और किस पद पर हूँ। फिर भी तेरी सन्तुष्टी के लिए मैं तुझे बताए देता हूँ, कि तुम जिस आफिस से मातमी सूरत लिए लौट रहे हो न, मैं उसी आफिस का हैड क्लर्क हूँ। मेरे हाथ में बहुत कुछ है। तभी तो तेरे चेहरे को देखते ही मैं भाँप गया था, कि तू क्या चाहता है और यहाँ क्यों आया है ?'

"सच मा ! उसकी बातों से मैं बहुत प्रभावित हो गया हूँ । लगता है मुझे नौकरी जरूर दिला देगा । मैंने कहा—

"आप मुझे वहाँ नौकरी दिलवायेंगे ?"

बोला—"तुम्हें इस बात से क्या लेना-देना । यह सब कुछ मैं सोचूँगा कि तुम्हें कहाँ पर क्लर्क बनाया जाये ।" फिर कुछ रुक कर बोला—

"जानते हो क्लर्क बनने के बाद तुम्हें कितना वेतन मिलेगा दो हजार रुपये । हर महीने मिलेंगे ही साथ ही ऊपरी आमदनी भी ।"

मैंने प्रसन्न होकर पूछा—

"तो फिर मुझे क्या करना होगा ?"

'बस कुछ नहीं । अपनी सभी अंक सूचियाँ दे दो ——

"वह तो मैं लाया हूँ । यह कहते हुए मैंने अपनी फाइल में से सभी अंक सूचियाँ निकाल कर दे दीं ।"

बोला—"नम्बर तो बहुत अच्छे हैं, बरखुरदार ! पढ़ने लिखने में बहुत होशियार हो । तुम्हारी नौकरी तो जरूर लग जाएगी । बस तुम्हें "

फिर वह चुप हो गया । मैंने पूछा "हाँ मुझे क्या करना होगा ?"

कहने लगा ध्यान से सुनो—

"ये हमारी और तुम्हारी बातें किसी से न कहना ! कभी इस आफिस में पूछने मत आना ! ये बहुत गुप्त बातें हैं जो तीसरे को नहीं बतलाई जातीं । नहीं तो काम बिगड़ जाता है ।'

जब मैंने उसकी सभी शर्तें मान लीं । फिर वह बोला पाँच हजार रुपयों का कल तक इन्तजाम और कर लो ! क्योंकि ये रुपये नीचे से ऊपर अफसरों तक सभी को देने पड़ते हैं । इनके बिना तो काम हो ही नहीं सकता ।'

माँ ! मैं जितना प्रसन्न हो रहा था वह सारी प्रसन्नता रुपयों को सुन कर धूमिल हो गई । मैं चुप हो गया । मुझे शान्त देख वह बोला—

'घबड़ाता क्यों है, बच्चू ! ये रुपये तो तू तीन महीने में ही कमा डालेगा । यह तो कोई ज्यादा नहीं । तुझे देखकर ही मैंने कम माँगे है,

अन्यथा मैं दस हजार लेता। सोच ले, अगर तुझे नौकरी चाहिए। तो तू इस आफिस मे नही, मेरे घर आना। वही बातें होंगी। मेरा पता यह है "

'इतने सारे रुपये कहा से लायेंगे बेटा।"

"यह तो मैं भी सोच रहा था, मा। इसी कारण मैं तुम्हे बतलाकर दुखी करना नही चाहता था।"

"नही बेटा! अब तो किस्मत मे दुख ही लिखा है, सो भोगना पड़ेगा।" कह कर माँ अन्दर चली गई। पलग पर लेटी वो सोचने लगी—

"जब मैं शादी के बाद यहाँ आई थी तब कुछ दिनो मे इस घर के माली हालत सुधर गये थे। यह देख सास-ससुर और ये स्वय भी कहने लगे थे तुम तो हमारे लिये लक्ष्मी स्वरूपा हो। तुम्हारे आते ही हमारा घर स्वर्ग बन गया।" उस समय मने यह कल्पना कभी भी नही की थी, कि उसे आज यह भी दिन देखना पडेगा इनकी मौत के बाद तो इस परिवार पर मुसीबतो का पहाड आ गिरा रवि, जिसके दिन खाने और पढने के हैं वह आज नौकरी के लिये दर दर की ठोकरें खाता फिर रहा है। अभी इसकी उम्र ही क्या है। उसके किशोर मन पर इन सब बातो का क्या प्रभाव पडेगा हे भगवान! ये तुम ने क्या कर दिया। अब एक ही आशा है, कि यदि रवि को नौकरी मिल जायें तो इस घर की हालत सुधर जाये। लेकिन पाच हजार रुपये इतनी बडी रकम क्यो न बैंक मे निकाल कर दे दूँ। नहीं नही,वह तो फिक्स जमा है, उनमे से कैसे निकलेंगे। अगर निकल आये तो उसी मे से दे दूगी। यह सब सोचते सोचते उनके नयनों से आँसू निकल आये थे।

रवि बोझिल कदमो और दुखी मन से घर से निकल सडक पर चला जा रहा था जिसे स्वय भी पता नही था कि कदम कहाँ जा रहे है, और उसकी मजिल क्या है? बस, अपने मे डूबा खोया खोया सा। दो बार तो वह सामने से आते वाहनो से टकराते टकराते बाल बाल बचा। तभी सामने से हार्न बजाता स्कूटर उसके सामने आ रुका। रवि चौंक पडा। उसकी तन्द्रा टूटी। यद्यपि स्कूटर चलाने वाला कोई गैर नहीं अपितु उसका अपना

मित्र राजेश था। रवि को पहिचानते हुये राजेश बोला—

"किन ख्यालों में खोये थे कि हॉर्न तक सुनाई नहीं दिया!"

रवि कुछ झेंप सा गया बोला—

"कुछ नहीं।"

'कुछ तो! ये क्या हाल बना रखा है!

रवि बोला—"दोस्त, आजकल सड़कों की धूल छान रहा हूँ।

क्या मतलब?'

मतलब यह कि मैंने बी० एस० सी० प्रथम श्रेणी में की है और नौकरी के लिये भटक रहा हूँ।" "ओह, नौकरी! लेकिन उसकी अभी इतनी जरूरत क्या आ पड़ी।"

"जरूरत किसे नहीं होती दोस्त! अन्तर इतना है तुमने जिस चीज को पहले समझा मैं अब समझ रहा हूँ? पिताजी का अचानक हार्ट अटैक हो जाने से परिवार की सारी जिम्मेदारी अब मेरे पर है। मुझसे छोटे तीन भाई बहिन और हैं। बहुत कोशिश की कि पिताजी के आफिस में ही नौकरी मिल जाए किन्तु वहां से निराशा ही मिली। स्कूलों में भी गया किन्तु कोई लाभ नहीं जीवन अब बहुत निराश लगने लगा है। चार पांच स्थानों पर इन्टरव्यू भी दे आया हूँ किन्तु वहाँ अपने परिचितों या रिश्वत देने वालों को ही रखा गया। इन्टरव्यू मात्र औपचारिकता थी।"

रवि की बात सुन राजेश बोला—

"दोस्त! तू भी दे क्यों नहीं देता क्योंकि आज की दुनिया में बिना लिये दिये काम नहीं होता। मेरे को देखो! मैंने तुम्हारे साथ हाईस्कूल ततीय श्रेणी में पास किया था। उसके बाद घोष बाबू को रुपये देकर फैक्टरी में लग गया। दो वर्ष बाद ही मैं अच्छा वेतन ले रहा हूँ। देखो, यह स्कूटर भी अपनी कमाई का है।"

रवि आश्चर्य के साथ बोला—

'दो सालों में तुमने इतना रुपया कमाया कि स्कूटर भी खरीद लिया। कमाल है।"

"कमाल तो एक बार लग जाने के बाद सभी करने लगते हैं।" राजेश ने स्वाभिमान के साथ कहा मैंने मेहनत और मजदूरी से कारखाने में मैनेजर और इन्जीनियरों को प्रसन्न कर लिया है, जिससे मेरा प्रमोशन जल्दी हो गया और पगार भी बढ़ गई।"

राजेश से बातें करते हुये अपने आप को निम्न और हीन समझ रहा था। अनायास उसके मुख से निकल गया—

"मित्र, मेरी भी नौकरी लगवा दो। मैं तुम्हारा एहसान मानूँगा।"

मैं तुम्हें विश्वास तो नहीं देता दोस्त, लेकिन हाँ मैनेजर से तुम्हारे बारे में बात करूँगा।"

राजेश से बातें करके रवि का मन प्रसन्न और कुछ हल्कापन महसूस कर रहा था। उसे यूँ लग रहा था, कि वह भी उस आदमी को रुपये दे देता नौकरी लग जायेगी और मेरे पास भी नये नये कपड़े और स्कूटर होगा। तब मैं भी स्वाभिमान के साथ बातें करूँगा देखो, हाईस्कूल थर्ड डिवीजन मुझ बी एस सी फर्स्ट क्लास के सम्मुख कैसी बात कर रहा था लेकिन, क्या माँ बैंक के फिक्स को तोड़ देगी यही विचारता मन उलझा रवि घर आया और माँ को राजेश के बारे में सब बतलाया कि नौकरी के लिये उसने भी रिश्वत दी थी। आज वो, क्या ठाट बाट से स्कूटर पर घूम रहा है।

यह सब सुनकर माँ को बहुत दुःख हुआ। वह तो बेटे को हर तरह से प्रसन्न देखना चाहती थी बोली "बेटा! तुझे ऐसा लगता है कि देने से तेरी भी नौकरी लग जायेगी, तो तू भी बैंक के फिक्स को तोड़कर दे दे। लेकिन देना सोच समझ कर, कहीं वो तुझसे रुपये ठग कर न ले जाय। रुपये देने के बाद उससे रशीद जरूर ले लेना।"

मा की मनानुकूल बातों को सुनकर हँसता हुआ रवि बोला "नहीं मा मैं कोई बच्चा तो नहीं हू कहता हुआ अपने कमरे में चला गया।

रवि के जाने के बाद वह सोचने लगी "अगर इसकी नौकरी लग गई तब हमारी सारी परेशानिया दूर हो जयेंगी। इस बच्चे का हौसला बढ़

जायेगा   कितना कमजोर और थका सा दिखलाई पडता है। नौकरी के बाद सब ठीक हो जायगा   अच्छे घरान की लडकी मे शादी कर लूगी, फिर यह साचते हुये भविष्य के सुनहरे सपना मे खो सी गई। तभी उनकी विचारधारा म मोड आया और वह सोचने लगी, कही विवाह के बाद इसके विचारा म परिवतन आ गया तो   नही नही जब तक इ द्रा के हाथ पीले न हो जायें और पकज कही लग न जाय तब तक विवाह नही करूँगी   यह सोचते विचारते वह न जाने कब निद्रा के आगोश म डूब गई।"

दूसर दिन रवि मुफतलाल के लिखे पते पर ढूढता ढूढता पहुँच ही गया। वास्तव मे उनका घर बहुत दूर था। मुफ्तलाल रवि का देखते ही मुस्कुरा दिये और ड्राइग रूम म ल गये। रवि कमर की साज सज्जा को देखकर हत पभ रह गया। कमरे म सभी कीमती वस्तुयें रखी हुई थी। हाथ की बनी सु दर सु दर पटिग लगी हुई थी। फश पर आकषक कालीन बिछा हुआ था। जिस साफे पर वह स्वय बठा था, वह भी नय डिजाइन का कीमती लगता था। रगीन टी वी एक काने म रखा अपनी सोभा को बढा रहा था। बक तरफ सु दर सी लकडी की अलमारी रखी थी, जिसके एक खाने म ग्र थ और दूसरे म उप यास लगते थे। इस प्रकार कमरे की प्रत्येक चीज उसे अपनी तरफ आकर्षित कर रही थी और उ ह लोभवश देख रहा था। तभी उस मुफतलाल का स्वर सुनाई दिया–

'बच्चू, देख क्या रह हा ! नौकरी लगन पर तुम भी यह सब खरीद सकोगे ! हाँ, मेरी बातों के बारे म क्या सोचा ?"

आपको रुपये देने के कितने समय बाद नौकरी लग जायेगी। ' रवि न कहा

"मिस्टर रवि ! कम स कम पन्द्रह दिन ता लग ही जायेंग। मर घर का मामला तो है नही जो तुम्ह अभी देदूँ। अफसरों की भेंट–पूजा करूँगा, तब वह स्थान रिक्त करेंग। तुम्ह इन्टरव्यू के लिय बुलायेंगे, तुम ठाठ स द आना। घबडाना नहीं वहाँ तुम्हारा सिलेक्शन पक्का। इसके बाद करीब

लगी। वह बड़ी बेसब्री से पोस्टमैन का इंतजार करने लगा। उसके आते ही बोला—

"दादा मेरा कोई लैटर आया।"

"नहीं बेटा! तू क्या परेशान होता है, जब आयेगा तब मैं तुझे तुझे दे दूँगा।' 'नहीं' को सुनते ही रवि का चेहरा उतरा सा हो गया। उसके मन में अनेक कुशंकायें आयीं। वह झटपट तैयार हो लिया कुछ ही घर से निकल मुफतलाल के घर पहुँचा। दरवाजे पर बड़ा सा ताला लटक रहा था। पड़ोसी से पूछा—

"ये लोग कहाँ गए हैं?"

"सुबह तो देखा था, शायद अभी आफिस से नहीं लौटे हैं।"

रवि रात आठ बजे तक इंतजार किया, किन्तु वे नहीं आये। तब हार कर वह अपने आने की सूचना कागज पर लिख कर पड़ोसी को दे गया। दूसरे दिन भी चक्कर लगाया, किन्तु हर बार उसे ताला ही मिला। पड़ोसी से पूछने पर यही उत्तर मिलता "पता नहीं कहाँ गये हैं।"

बीस दिनों तक जब मुफतलाल से साक्षात्कार नहीं हुआ तब रवि का माथा ठनका। वह सीधा उसी आफिस पहुँचा जहाँ प्रथम मुलाकात में प्रभावित हुआ था। चपरासी से पूछने पर पता चला कि इस नाम का कोई व्यक्ति यहाँ काम नहीं करता।

रवि को चपरासी की बातों का कोई यकीन नहीं हुआ। वह सीधा हैड क्लर्क के केबिन में पहुँच गया। वहाँ कुर्सी पर किसी अजनबी को देखकर वह सकते में आ गया, और अपना होशोहवास खो बैठा। हैडक्लर्क के पूछने पर—

'कहिए क्या काम है?'

रवि बोला—

'मुझे मिस्टर मुफतलाल से मिलना था, जो यहाँ हैडक्लर्क हैं।' सुनते ही सज्जन मुस्कराये और बोले—

'मैं यहाँ का हैडक्लर्क हूँ, शायद आपने नेम प्लेट नहीं देखी। मेरा नाम घनश्याम शर्मा है।"

सुनते ही रवि की तद्रा टूटी।

"आप किसी को खोज रहे हैं।"

"हाँ हाँ, आपको कैसे मालूम ?"

"कल कोई महिला आई थी, वह किसी श्यामसुदर को खोज रही थी पूछने पर पता चला, कि इसी आफिस का कोई सज्जन नौकरी के बहाने चार हजार रुपये ऐठ ले गया। मेरी समझ मे नही आता कि आप लोग ऐसे कैसे किसी अजनबी पर इतना भरोसा कर लेते हैं।

रवि अब कुछ बतलाने की स्थिति मे नही था, शर्मि दा जो हो रहा था पूरी बात को सुने बिना ही शा त भाव स चल दिया। सोच रहा था, आज उसे मकान पर ही पकड़ू गा, भल मुझ रात क्यो न हो जाये। मकान दूर था और जेब म रुपये भी नही थे। भूखा प्यासा पैदल ही चलता रहा। देखा मुफतलाल के बाहर तो ताला लगा है। सोचा, मकान मालिक से पूछ लिया जाय। यह विचार कर वह ऊपर गया और मुफतलाल के बारे म पूछा तो पता चला कि इस नाम का तो कोई व्यक्ति किरायेदार नही है।

रवि बोला—

"यह नीचे कमरे वालो की मैं बात कर रहा हूँ।"

"ओह, शर्मा जी के बारे मे कह रहे हो, बैठो, वह आते ही होगे।" रवि के समझ म नही आ रहा था। वह बैठ गया। भाग्यवश थोड़े इतजार के बाद शर्माजी भी आ गये। रवि ने जब उन्हें देखा तो उसकी रही सही आशा पर भी पानी फिर गया। वह मुफतलाल नही कोई अ य सज्जन थे। बोला—

"इनसे पहले कौन रहता था।" मकान मालिक बोला—

"वो तो श्रीवास्तवजी थे जो ट्रा सफर होकर आये थे। उन्हें यहाँ का वातावरण अच्छा नही लगा तो वह न्यू कालोनी मे चले गये।" रवि बोला—

"वहाँ का पता है आपके पास।"

मकान मालिक ने एक पेपर पर पता लिख दिया, जिसे ले वह वहाँ से चल दिया। वसे अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि वह ठगा गया है,

फिर भी कुछ आशा ले वह चल दिया। भूखा पेट, थका शरीर और बोझिल मन सभी आगे बढ़ने में अपनी असमर्थता प्रकट कर रहे थे, फिर भी कुछ आशा मन के किसी कोने में छिपी हुई थी।

लिखे पते के अनुसार 'यू कालोनी पहुँचा तो पता चला कि वहाँ कोई किरायदार नहीं रहता है। सुनकर रहा सहा हौसला भी टूट गया। रात हो चुकी थी, घर जाने की इच्छा नहीं रही थी। सोच रहा था, अब तो मर जाना ही बेहतर है। माँ से क्या कहूँगा? वो क्या सोचेगी? सुनकर उनके ऊपर क्या बीतेगी नहीं नहीं मैं घर नहीं जाऊँगा। इन्हीं विचारों में उलझा हुआ वह रेल की पटरियों की तरफ चला जा रहा था। तभी पीछे से किसी ने पुकारा———

'रवि रवि! मैं तेरे लिए एक खुशखबरी लाया हूँ।"

सुनते ही पीछे मुड़ा तो देखा उसका दोस्त राजेश खड़ा था। बोला–

"इधर कहाँ जा रहा था?"

रवि ने अपने मन की बातों को छिपाते हुये कहा–

"कहीं नहीं, घर जा रहा था।"

"मैंने अपने मनेजर से बात कर ली है, कल तू अपनी सभी मार्कसीट लेकर बारह बजे मेरी फ़ैक्टरी में आ जाना। शुरू में कम देंगे, किंतु बाद में सब ठीक हो जायगा।'

रवि को वह स्कूटर से घर छोड़ गया। रात्रि भर रवि को नींद नहीं आई। बार बार मुफतलाल का चेहरा उसकी नजरों में घूम रहा था, सोच रहा था, जिस नौकरी के लिए मैं आत्म हत्या तक करने को मजबूर हो गया था, वही । अगर राजेश नहीं आता तो वह न जाने क्या कर बैठता सुनकर माँ का क्या हाल होता? पिताजी के सदमे से ही टूट चुकी है, मेरी घटना को सुनकर क्या होता। नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये ।

रवि निरुत्साह मन से फ़ैक्टरी पहुँच गया। जब मनेजर साहब से बातें हुई तो उन्होंने कहा——

"मिस्टर रवि ! काम ता हम तुम्हारी डिग्री को देखकर दे सकते हैं।"
यह सुनते ही उसके कुछ मन म आशा का दीपक जल उठा, किन्तु थोडे समय बाद ही उसन सुना—

"कि तु रुपये दा सो ही मिलने।" यह सुनत ही वह काप गया। मनेजर साहब कह रह थे—

"मिस्टर रवि ! काम पस द हो तो कल से आना शुरू कर दो।" रवि बोला—

"सर ! मेरी प्रथम श्रेणी और विशेष योग्यता का इतना ही मूल्यांकन।" मुस्कुराते हुये मैनेजर साहब बोले—

"हमारे यहाँ तो एम ए एम एस सी फस्ट डिवीजन वाले भी काम कर रहे हैं, लेकिन अभी हम उ हे इतना ही वेतन दे रहे है।"

रवि प्रसन्नता और दु ख के सागर म डूबा हुआ घर लौट आया है। घर जाकर माँ स कहा—

"माँ ! मुझे नौकरी मिल गई है।" यह सुन मा बहुत खुश हुई, साथ छोटे भाई बहिन भी। माँ ने पूछा—

"बेटा कितन रुपय हर महीने मिला करेंग ? यह सुनन ही वह असमजस मे पड गया कि माँ से क्या कहे। अ त म दु ख मिश्रित शब्दा मे धीरे स कहा—

"अभी दा सौ रुपय ही मिला करेंग, बाद मे बढ जायेंग।" यह सुनते माँ की प्रसन्नता वेदना स भर गयी। और कहन लगी—

हे भगवान, यह क्या किया। इतना रुपए देन के बाद इतन कम रुपया की नौकरी 'उ हें याद है, जब इस घर मे आयी थी तब इनकी नौकरी भी अस्सी रुपए की थी। बाद मे बढत बढ़त आठ सौ रुपए हो गई मेरे रवि की नौकरी तो अपन पिता स दा गुनी अधिक ही लगी है, धीरे धीरे बढ जाएगी और मेरा लाल एक दिन अफसर बन जाएगा। म ता उ सी दिन की आस म जी रही हूँ तब म कहलाऊँगी अफसर बेटे की 'माँ'

३
अर्पण

चाँदपुर गाव के कोने मे नीम का एक पुराना वक्ष था, जिसका अधिकाश भाग घास फूस और छप्परो म ढका था। इसी मकान मे वद्ध माँ अपने सात पुत्रो अशोक, दिनेश, सुरेश, राजेश, महेश आदि के साथ रहकर निधनता म दिन व्यतीत कर रही थी। सभी भाई गाँव की पाठशाला मे अध्ययन किया करते थ। वद्धा माँ अपने दो बीघे के एक मात्र खेत मे कृषि काय कर अपना व अपने बच्चो का भरण पोषण करती थी।

पास का झोपडी म अकल्पित, लावण्यमी, कमनीय, किशोरी कान्ता निवास करती थी। जो आयु म अशोक स कुछ मास ही छोटी थी, किन्तु अनपढ होते हुये भी विवक और बुद्धि म उसम बहुत आग थी। अशोक मन ही मन उसम अपार प्रम करता था और सम्भवत कान्ता भी।

एक दिन वृद्धा माँ न मन म अधिक परिश्रम किया। अत सन्ध्या समय जल्दी सभी बच्चो का भोजन खिलाकर और स्वय शिथिल होकर चारपाई पर लेट गइ। थकी शिरदद म परेशान अपन अतीत म खो गई। अशोक और दिनेश नित्य की भाति माँ के पास आय। मा को लेटी देख अशोक बोला--

"माँ! आज तुम जल्दी क्या लेट गयी? क्या बहुत थक गई हो?"

वद्धा माँ का मस्तक दद स फटा जा रहा था, लेकिन बच्चो की कोमल वाणी सुनकर बोली--

"नही बेटा! काम स जल्दी निपट जान के कारण लेट गई हूँ।"

दिनेश बोला--"नही मा! तुम हमेशा हमको बहलाया करती हो, लगता है, कि आज तुम कुछ अस्वस्थ हो।" यह कहते हुये उसने माँ का

सिर दाबना शुरू कर दिया। अशोक जो माँ के पास खड़ा था, वह भी माँ के पैर दबाने लगा। यह देख माँ के नेत्र खुशी से चमक आये।

अशोक बोला—माँ ! तुम ज्यादा काम न किया करो। हम भी काम किया करेंगे। माँ ! मैं बड़ा होकर अथक परिश्रम करूँगा तथा खूब रुपया कमाऊँगा। सभी भाइयों को पढ़ाऊँगा, उन्हें उच्च शिक्षा दिलाकर देश का उच्च नागरिक बनाऊँगा। माँ ! तुम किसी प्रकार की चिंता न किया करो हम सभी भाई तुम्हारी बहुत सेवा करेंगे।"

बच्चों की मीठी मीठी बातों को सुनकर वृद्धा माँ अत्यंत भाव विभोर हो गई। हर्ष के कारण नेत्र में आँसू छलक आये। बच्चों के सिर पर हाथ फिराते हुये बोली—

'जीते रहो मेरे लाडलो, जीते रहो। तुम्हारे आचार विचारों से ही तो संतुष्ट होकर मैं मौत को भी जिंदगी में बदलती जा रही हूँ। एक दिन अवश्य आयेगा जब बची बचाई मौत अनंत जीवन के रूप में परिवर्तित हो जायगी। वह शुभ दिन तुम सभी को मिल कर लाना होगा।"

माँ की रहस्य भरी बातें सुनकर अशोक आश्चर्य में आ गया और माँ से बोला— 'माँ ! बताओ कैसे ?

बेटे को उत्सुक देख वृद्धा माँ बोली—

स्वदेश रक्षा हित अपना शरीर अर्पण कर जाना। देश पर भीषण आक्रमण होते आये हैं। भारत माँ की रक्षा के लिए सेना में भर्ती कराके तुम्हारी माँ परम प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

यह सुन अशोक और दिनेश बोले 'ऐसा ही होगा 'माँ'। हम सभी तुम्हारी आज्ञा एवं स्वकर्त्तव्य पालन के लिए कटिबद्ध है।"

बात आई गई हो गई। कुछ अर्से बाद अशोक अपने सभी भाइयों के साथ दौड़ता हुआ आ रहा था क्योंकि माँ ने संध्या के समय खेत पर आने को कहा था। इसीकारण लड़के जल्दी में दौड़ते हुए जा रहे थे, कि अचानक सामने बोझ से दबी बड़ा सा गट्ठर लिये कोई ती में ज्वार के खेत पर टकरा गये। बेचारी आहत होकर गिर पड़ी। गट्ठा उसके ऊपर था। कातो न रोते हुये रोष से कहा—

जिस प्रकार तुमने मुझसे भिड़ने मे पराक्रम दिखाया है, वैसा ही तुम देश के आक्रमणकारी शत्रुओ से करो। जिससे तुम्हारा और तुम्हारे वंश का नाम उज्ज्वल हो जाये।"

यह सुन अशोक विह्वल हो गया और बोला—

"हाँ कान्ती! आज तुमने हम सभी को सही दिशा दे दी है। हम तुम्हारी वाणी को देवी के वरदान स्वरूप स्वीकार करते हैं। अब हम अविलम्ब सेना मे भर्ती होगे। माँ की भी यही इच्छा है। अब तुम हमे आशीर्वाद दो बहिन।"

बहिन शब्द को सुन कान्ती कुछ बौखला सी गई। फिर उसने हिम्मत से काम लिया। सभी भाईयो के मस्तक पर रुधिर का जगमगाता तिलक लगा दिया और युद्ध मे विजयी होने की मगल कामना की। सभी ने हाथ जोड़े और मा के पास पहुँचे।

मा ने बेटो के भाल पर खून का टीका देखा तो हैरान रह गई और बोली—

मेरे बच्चो! मस्तक पर यह तिलक कैसा? क्या आज किसी ने तुम्हें मारा है? जिसका बदला लेने के लिये तिलक लगाकर शपथ ली है।'

यह सुन बच्चे मुस्कराये। दिनेश बोला 'माँ! तुम्हे स्मरण होगा कि एक दिन तुमने ही हमे भारतीय सेना मे भर्ती कराने की इच्छा व्यक्त की थी। वही आग्रह आज रक्त तिलक करके बहिन 'कान्ती' ने की है।'

यह सुनकर वृद्धा 'मा' बोली—"अच्छा, तो तुम सभी भारत मा' की सेवा के लिये तत्पर हुए हो। मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है तथा महान सतोष की अनुभूति हो रही है।"

घर आ माँ ने खाना बनाया। बच्चो को खाने के लिये आवाज लगाई। 'आओ बच्चो! भोजन कर लो।"

भोजन की बात सुन अशोक बोला—

"माँ! आज हम सभी तुम्हारे साथ थाल मे भोजन करेगे। सम्भव है सेना मे भर्ती होने के बाद तुम्हारी सेवा मे उपस्थिति होने का अवसर ही प्राप्त न हो सके।"

''पगले यदि ऐसा हुआ भी तो क्या, तुम्हारी माँ' तुम्हारे पास तक पहुँच न सकेगी।'

सभी बच्चों ने आज माँ के साथ बड़े उल्लास तथा उत्साह के साथ भोजन किया। आज वे सभी सो गये, किन्तु अब वृद्ध माता की आँखों में नींद कहाँ थी। उन्हें रह रह कर अपना बेटा ही याद आ रहा था। सोच रही थी वह भी इसी प्रकार की मन लुभावनी बातें करता था—और हाँ युद्ध में जाते समय उसके चेहरे पर भी कितना तेज था—आज उसी प्रकार का तेज उसकी सन्तान के चेहरों पर चमक रहा है।

सहसा वह जाग की आशंका से घबड़ा जाती है। मैंने इनसे कह तो दिया है। क्या मैं इनके बिना रह सकूँगी? —अन्तरात्मा पिर उठती है और कहती है 'जब वह दिया तब घबड़ाने की क्या जरूरत है। यह तो संसार का चक्र है। यहाँ न जाने कितने आये हैं और कितने चले गये हैं। तू हिम्मत न हारना, समय से मुकाबला कर। देख तुझे कितना यश मिलेगा।' इस प्रकार उसकी रात्रि आशा व हौं यादों के सहारे कट गयी थी।

प्रातःकाल वृद्ध माता ने जल्दी उठकर अनेक प्रकार के पकवान बनाये और सभी बच्चों को अपने हाथों से भोजन कराया। उन्हें मुद्रायें दीं। सभी बच्चों के मस्तक पर कुमकुम का तिलक लगाकर माँ बोली—

मेरे प्यारे बेटो! तुम सभी मेरे हृदय के अंग हो! तुम्हारे रुधिर की प्रत्येक बूँद में मेरे रक्त का अंश विद्यमान है। तुम्हारी नस नस में तुम्हारे वीर पिता का रुधिर प्रवाहित होता है। संसार में प्यार मान के लिए जीवित रहते हुए सभी मरते हैं किन्तु समर भूमि में शत्रुओं के छक्के छुड़ाते हुए स्वराष्ट्र के लिए स्वेच्छा से अपने शरीर का अर्पण करने वाले वीर सदा के लिए अमर हो जाते हैं। एसे ही अनेक वीर अभिमन्यु, चन्द्र शेखर आजाद और भगत सिंह आदि की अनेकों कहानियाँ, मैं तुम्हें सुनाई थी। मेरे लिए तुम सभी बराबर हो कोई छोटा बड़ा नहीं। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम! शत्रुओं का नाश करके युद्ध में विजयी

होओ यही मेरी मगल कामना है। तुम मेरी चि ता न करना। मैं तुम्हार अनुपम त्याग और देश प्रेम का सम्वाद सुनकर, जीवन प्राप्त करूँगी।"
यह कहते कहते वद्ध माता शा त हो गई, गला रुँध गया, आखें भर आई।
"मा! हम सदा तुम्हारे इन वचनो का स्मरण कर सदा स्फूर्ति लाभ करते रहेंगे। बहिन 'का ती' का कल का रक्त तिलक भी क्या हम भुला सकेंगे। हमारे पीछे तू अवश्य ही वीर माता कहलायेगी।"
"और तुम सभी अभूतपूव वीर।"
ऐसा कह मा ने सभी पूत्रो के सिर पर प्यार से हाथ फिराया। सभी पुत्रो न जननी की चरण रज मस्तक पर धारण की। बहिन 'का ती' के पैर छुए और अ य उपस्थित लोगो को प्रणाम किया। सभी ने उन्हे भाव-भीनी विदायी दी।
वृद्ध माता के साता पुत्र सेना म भर्ती हो गये। वहा से व अपनी मा को सु दर सा प्यारा-प्यारा मीठा सा पत्र लिखते जिसे पढ वृद्ध माता प्रसनता से आत्मविभोर हो जाती थी और वेटी का ती को दिखाती थी। अब उसे अपने ऊपर बडा गव होता था भले ही गाव के कुछ व्यक्ति उसकी कटु आलोचना करते थे। उसे सनकी, सिरफिरी आदि कहते थे, लेकिन उस वद्धा को उनकी इन बातो की तनिक भी परवाह नही थी। वह ता यह सोचती थी कि स तान का प्रथम क्त य अपनी मा की रक्षा करना है। ज म देने वाली मा' से बडी उसकी 'भारत मा' है। जिसकी रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का उत्तरदायित्व है।
कुछ व्यक्ति वृद्ध माता की प्रशसा और सहायता भी करत थे कहत—
"वास्तव म 'मा' तुम्हारा हृदय विशाल और उदार है। जिसने अपने बुढ़ापे के सहारे को 'भारत मा' की सेवा म अपण कर दिया। तुम्हारे समान देश की सभी मातायें हो जावें, तो इस 'माँ' पर विदेशी राज्य होना तो दूर, वे अपनी दृष्टि उठाने म ही डरेंगे! वास्तव म तुम एक बहादुर माँ' हो! ध य हो मा! तुम ध य हो।"— —
इस प्रकार 'वृद्ध मा' लोगो की दृष्टि म ऊँची समझी जान लगी।

सभी वग के व्यक्ति आदर करते और मां' का पूरा ध्यान रखत थ। अपन पुत्रा के जाने के बाद सभी अपने जस ही बन गय थ। हालाकि उन्हें जन्म तो नही दिया था, लेकिन सभी मां को सुख पहुँचाने का ही काय करते थ। वद्ध माता का यह अहसास हो नही होने पाया कि वे उसके अपने पुत्र नही।

वृद्ध मां जब कभी अकेली होती या अकेलापन महसूस करती, तब मन पुत्रा की तरफ अनायास ही चला जाता। हृदय विकल हो जाता यहीं वे ।यह सोच आंखो स आंसू निकल आते। गुमसुम बठी अपने अतीत म खो जाती थी। ऐसे समय बहिन 'का ती उनके मम को समझ लेती और उन्हें खुश करने वाली मीठी मीठी बातें ही करती। वद्धा भी समझ जाती कि यह मुझे खुश करन के लिए ही कह रही है। तब वह अपने दुख का छिपाती हुई कहती–

"बेटी! मैं पुत्रा के लिए दुखी नही। मेरे लिए तो तुम सभी मेरे बच्चे हो।" कहते हुए गला भर आता।

कुछ वर्षों के बाद भीषण युद्ध हुआ और दानो आर के सनिक भारी सख्या म आहत हुए। यश्री किसी की हुई यह अनुमान लगाना कठिन था। उसी रणभूमि मे वद्ध माता के सातो पुत्र भी शत्रुआ स टक्कर लेते हुए अमर गति को प्राप्त हो गये।

कमाण्डर जब चादपुर गाव म वद्ध माता क सामन पहुँचा तो उस समय सध्या हो चुकी थी। बहिन का ती भी वहीं था, जा भाइया के जाने के बाद स ही वृद्ध माता की सवा म तत्पर रहती थी। कमाण्डर ने वद्ध माता के पर छुए और बोला—

"मां! मेरी आखो के सामने तुम्हारे वीर पुत्रो ने एक साथ शत्रु के टका का नष्ट कर दिया, जिससे उन्हें वीर गति और विजयश्री प्राप्त हुई। तुम सचमुच वीर माता हा।"

वद्ध माता ने अपनी बुझती हुई आखो स वह सब दृश्य देखा बोली–
'दीप त न न मैं अपना मृत जीवन बिता रही थी, अब मैं बहुत

प्रसन्न हूं ''   । अच्छा मैं अपने पुत्रों के पास पहुँचकर अखंड जीवन प्राप्त कर रही हूँ ।''

यह कहते वृद्ध माता अंतिम श्वास लेने लगी । ये देख बहिन का ती घबरा गई और कहने लगी—

''माँ ! यह क्या कर रही हो ? पर तब तक मा के प्राण पखेरू उड चुके थे । इसी समय बहिन का ती ने देखा आकाश मे एक तारा टूट कर सप्तर्षी मडल की ओर से आकर ध्रुव नामक तारे के पास विलीन हो गया । उसको ऐसा लगा जैसे मा और उसके पुत्रों का सप्तर्षी मडल मे स्थान मिला हो । पृथ्वी तल स समस्त महाद्वीप मृत्यु का चित्रण कर रहे हों । आकाश के सप्तर्षी मडल का प्रत्यक तारा 'असर' जीवन' का एक एक शब्द प्रदर्शित करता है और शीघ विराम लगाती हो आठवें तारे के रूप म 'माँ' जो एक ओर तथा सभी तारागण दूसरी ओर ।

४

बेजबान

उसका नाम तो दूसरा था, लेकिन लोग उसे गूंगी कहते थे। माता-पिता ने बहुत सोच विचार कर उसका नाम 'लक्ष्मी' रखा था, क्योंकि वह चार भाइयों के बाद दीपावली वाले दिन जन्मी थी। परिवार में सभी उसे बहुत प्यार करते। चन्द्रमा के समान वह बढ़ रही थी। जब वह चार वर्ष की हो गई, तब भी कुछ बोल नहीं पाती थी। गांव के डाक्टर को दिखाया तो उसने बतलाया—"यह तो गूंगी ही रहेगी।' सुनकर माता पिता को बहुत दुख हुआ, क्योंकि उनको सभी में ताना में नहीं बोलने में असमर्थ थी। धीरे धीरे उसका 'लक्ष्मी' नाम गुम हो गया, और गांव वालों ने उसको 'गूंगी' नाम दे दिया। अब वह गूंगी के नाम से चर्चित हो गई।

'गूंगी' तमिलनाडु की रहने वाली, जाति की मद्रासी थी। बचपन से ही वह तीखे नयन नक्शे वाली और सांवले रंग की। ईश्वर ने उसे वाक्-शक्ति नहीं दी, तो क्या? बुद्धि की मात्रा प्रचुर थी। लेकिन अकेली बुद्धि भी क्या करे? अगर उसे प्रकट करने वाली वाणी न हो। थोड़े समय में ही उसने माता पिता, भाइयों और आस पास रहने वालों का मन जीत लिया। उसकी क्रियाएं सामान्य बच्चों से ऊंचे दर्जे की होती थीं।

शिक्षा के लिए माता पिता ने उसे गांव की पाठशाला में भेज दिया था। वहां मास्टर भी उसकी बुद्धि को देख दंग रह जाते थे, क्योंकि वह तन्मयता के साथ चुपचाप सुनती रहती थी और जल्दी समझ जाती थी। समस्त बातों का इशारों के माध्यम से बतलाती थी। भला उस छोटी उम्र की बालिका के इशारे भी टूट फूट होते थे। मास्टरों को भी उसके बेजुबान होने का खेद था। कुदरत के आगे भला किसका वश चलता है।

अभी उसने जवानी की दहलीज पर कदम रखा था। वही सांवला रंग, मध्यम कद, गोल चेहरा और गठा शरीर। वही बचपन की 'गूंगी' आज किशोर बन गई। माता पिता के सम्मुख विवाह की समस्या खड़ी हुई। अपने रीति रिवाज के अनुसार उसका विवाह माँ के सग भाई यानी मामा के साथ हो गया। वह तो वह इशारा से ही बातें करती थी, किन्तु 'अम्मा', 'मामा', 'क्या', 'पा' जैसे कुछ शब्द अपनी भाषा में बोल लेती थी। 'गूंगी, अपने आदमी से मामा ही कहती थी, इसी कारण आस पास रहने वाले सभी उसे मामा' कहने लगे।

गूंगी अब अपने आदमी के साथ मध्यप्रदेश आ गई थी। उसके आदमी ने अपनी एक झुग्गी बना ली थी, जिसमें गूंगी और माँ सहित तीन व्यक्तियों का सीमित परिवार रहता था। आदमी के पास झोपड़े में एक छोटा मोटा होटल खोल लिया था, जिसमें इडली, डोसा और चाय मिलती थी। 'गूंगी' रात्रि को दाल, चावल पीस कर रख देती थी, सुबह मामा होटल ले जाता था। थोड़े समय में ही 'गूंगी, और मामा की मेहनत रंग लाई। होटल अच्छा चलने लगा। रुपया पैसा आ जाने लगा। गूंगी खुश थी, क्योंकि अब माँ भी बनने वाली थी।

गूंगी' ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया परिवार में आनन्द और उल्लास आ गया। बस 'गूंगी' को एक ही चिन्ता हमेशा सताती रहती थी, कि बड़ा होके यह भी उसी के समान गूंगा न निकले। कुछ महीनों बाद उसकी यह चिन्ता भी समाप्त हो गई, क्योंकि लड़का अब टूट फूट शब्द बोलने लगा था। किन्तु अब दूसरी परेशानी ने जन्म ले लिया। वह यह कि मामा ने संगति में बैठकर शराब पीना सीख लिया। अब वह प्रतिदिन दूकान से आधी रात को लौटता।

'गूंगी' चूंकि बोल नहीं पाती थी, किन्तु मामा के चाल चलन से अच्छी तरह परिचित थी, कि वह रोज शराब पीकर, रुपयेबरबाद करके आता है। अब वह तीन नहीं, उनके यहाँ चौथा मेहमान भी आ गया है। यही बात वह इशारा से अपनी नानी अर्थात सास को समझाने और मामा से समझाने

के लिए बार बार कहती थी। किन्तु वह समझाने के वजाय उसे मारने-पीटने लगता था।

इसी बीच उसने दूसरे बच्चे यानी क या को ज म दिया। अब वह दो बच्चो की माँ बन चुकी थी। मामा भी उसकी गू गी' होने का पूरा फायदा उठा रहा था, जब जी चाहता पिटाई कर देता। बिचारी रोने के शिवा कुछ न कर पाती। किसी के पूछने पर "मामा तुझे रोज रोज क्यो मारता है ?"

"गू गी कुछ इशारे करती हुई अम्मा अम्मा मामा मामा बोलती थी।"

लेकिन इन सभी से बात स्पष्ट नही हो पाती थी, वह बार बार समझाने का बहुत प्रयत्न करती। किसी की समझ मे थोड़ा बहुत आता था, किसी की नही। अधिक समझाने पर भी सामने वाला समझ नही पाता था, तब वह खीज उठती थी और जोर-जार से चिल्लाती हुई चली जाती थी।

'गू गी' का लडका तीन वष का और लडकी डेढ वष की हो गई थी किन्तु मामा के व्यवहार मे परिवतन नही हुआ, अपितु 'गू गी' के प्रति उसका व्यवहार अधिक कठोर बन गया था। अब वह आस पास के एक दो घरो म भी जाने लगी थी, उनका काम कर देती थी, जहाँ से उसे खाना, रुपया, कपडा आदि मिल जाता था।

एक दिन मामा ने नशे की अवस्था म एक पत्थर उसकी ओर मारा, जो पास बैठे लडके के सिर मे लगा। सिर से तेज गति के साथ रक्त की धारा बहने लगी। मामा को कोई चि ता नहीं। लेकिन 'गू गी' के नयनो स बर-बस आँसू निकल रहे थे। बच्चा जोर जोर से चीख चिल्ला रहा था। पडोसियों की मदद से वह उसे रात मे डॉक्टर के पास ले जा पाई। लडके के पाँच टाँके आये। उस रात 'गू गी' सो न सकी। अब वह मामा स भयभीत हो गई, कही वह किसी दिन उसके बच्चा को मार न डाले। इसी कारण उसने लडके को अपनी माँ के पास भेज दिया।

'गू गी' ने तीसरी बार पुत्र को ज म दिया। अब तक वह मामा के अत्याचारो से तग आ गई थी। जँचकी म भी भूखी-प्यासी पडी रहती थी।

मामा बिलकुल लापरवाह बन गया था। जो उसकी तथा अपनी औलाद की तरफ तनिक भी ध्यान नहीं देता था। जिसके परिणाम स्वरूप वह नवजात शिशु कुछ दिनों बाद ही चल बसा। 'गूँगी' को इस बच्चे का गहरा सदमा पहुँचा था। अब उसने मेहनत करके पेट भरने का निश्चय कर लिया। मामा को यह पसन्द नहीं था कि वह गैरों के घरों में काम करे। किन्तु वह उसे खाने और पहिनने को भी कभी कभार देखता था, जिससे तंग आ उसने घरों के बर्तन माजने, झाड़ू पोछा करने, कपड़े धोने आदि काम करना पुनः प्रारम्भ कर दिया।

मामा प्रातःकाल जल्दी उठ होटल चला जाता था। बाद में गूँगी भी घरों में काम करने चली जाती थी। वहीं से उसे खाना मिल जाता था, पहिनने को कपड़े मिल जाते थे। जब मामा आता तब वह झुग्गी में ही मिलती। पति के प्रहारों को वह अब भी शिकार हो रही थी।

थोड़े समय तक तो उसका भेद छिपा रहा, किन्तु अधिक समय तक न छिप सका। मामा को जब यह पता चला कि यह घरों में जाकर काम करती है, तब उस रात वह बहुत क्रोधित हुआ और उसको इतना पिटाई की कि वह उठ न सकी। बस चिल्लाती रही रोती रही अम्मा अम्मा। दो तीन दिनों तक वह काम पर न जा सकी। अब तो वह रोज ही 'गूँगी' को मारने पीटने लगा। पहले जो थोड़ा बहुत होटल से भेज देता था, अब बिलकुल बन्द कर दिया, रुपया धेली भी बन्द। जिससे लाचार हो वह मामा के अत्याचारों के बावजूद भी पेट की खातिर काम पर जाती थी।

ठंड का मौसम था, मामा ने अधिक पी रखी थी, नशा अधिक चढ़ा था। झुग्गी में 'गूँगी' को देख शिकारी की भाँति झपट पड़ा। वह अबला जार जार से चीख रही थी कोई बचाने वाला नहीं था। यहाँ तक उसकी नानी भी उसे न बचा पाई और मामा ने ठंड के वातावरण में ही रात्रि में गहन अन्धकार में ही उसे झुग्गी से बाहर धकेल दिया। अब वह कहाँ जाय? मन में तो बार बार यही आता था, कि पास के कुँए में गिर खुद

कुशी कर ले किन्तु बच्चों के कारण ऐसा न कर सकी ।

उस रात उसने परिचित घर म जाकर शरण ली। अब तो मामा उस बच्चलन भी कहने लगा था और वह बेजुबान चीखती चिल्लाती सहन करती थी।

एक दिन 'गूँगी' प्रसन्न मुद्रा म धाम पर आई िग दख भा कहा—

"ए गूँगी'। लगता ह, मामा तुम बहुत प्यार रर। लगा है तभी तू खुश नजर आती है।"

'सिर को नकारात्मक हिलाती हुई जार म खिल-खिला पडी। हाथ से इशारा करती मामा मामा कह रही थी।"

समझन म कुछ समय लगा। वह बतला रही थी कि "मामा कहीं चला गया है जो अभी तक लौट कर नहीं आया है।' शायद वह इसीलिए खुश थी कि अब मामा की मार स बचा ह। इसी कारण सार दिन हँसती चहकती फिरती थी।

कुछ अरसा गुजर जान के बाद भी जब मामा नहीं लौटा और ना ही उसके बारे म किसी प्रकार की काई सूचना ही मिली। तब 'गूँगी' के कोमल हृदय म व्याकुलता बढ़ गई क्योंकि उसके मन म मामा क प्रति असीम प्यार था। अब वह चिंतित रहने लगा।

लम्बे अंतराल के बाद मामा वापिस आया, किसी अजनबी की तरह। जो शायद गूंगी को जानता तक न था। अब वह उसे उपेक्षा और घृणा की दृष्टि स दखन लगा। थोड दिन रहकर वह फिर न जान कहाँ गुम हो गया, किसी को पता ही न चला। बेचारी इतन समय तक चिंता म ही घुलती रही, किसी से अपने मन के उद्‌गारों को प्रकट न कर पाई। शायद ही कोई उसके हृदय म छिपी पीडा को समझ सका हो।

तीन माह बाद मामा वापिस आया जिसे दखते ही वह प्रसन्न हो उठी। उसक रोम रोम पुलकित हो गया। किंतु कमजोर, थका मादा, बीमार मामा को दख किसी आशंका मे डूब गई। पूछने की कोई जरूरत ही नही पडी, इससे पूर्व ही उस उल्टियाँ होने लगी, साथ मे खून आने लगा। 'गूँगी'

घबडा गई क्या करें ? मामा को लिटाया । पडोस म दौडी दौडी गई ।
डाई गू गी मुख से 'मामा मामा मामा कहती इशारे करने ल
पडोसिन समय नही पाई, तब वह दूसरे घर भागी । वहाँ जाकर भी अ
अम्मा मामा मामा कहती इशारे करने लगी ।

पडोसिन बोली– 'मामा ने मारा ।'

सिर हिलाने लगी, माथा ठोकने लगी । शायद अपने भाग्य को को
रही या वाणी न होने का दुख मना रही थी । अचानक उसम न जाने कह
से ताकत आ गई कि उसने पडोसिन का कस कर हाथ पकडा और जबर
खीचती चल दी । उसके छुडाने पर भी नही छोडा । चिल्लाती हुई गूगी
तरफ ले जाने लगी । तब तक आस पास के घरो से लोग बाहर निकल
आये थे वह यही समझ रहे थे, कि इसने गू गी को मारा या भला बुरा कह
दिया होगा । तभी तो वह क्रोधित हो गई है । उन्हे गू गी के चिल्लाने म
चिढाने म आनन्द आता था । वही मजा लेने के लिए वह हँस रहे थे,
मुस्करा रहे थे । देखें अब क्या होता है । सभी को अपनी तरफ हँसता हुआ
देख कर पडोसिन भी घबडा रही थी, अ दर ले जाकर न जाने क्या कर ।
इसी कारण वह गू गी स हाथ छुडाने का प्रयत्न कर रही थी । लाख कोशिशों
के बावजूद भी वह उसकी पकड स छूट न सकी । अब तक कुछ भीड एक
त्रित हो गू गी' के पीछे पीछे जा रही । गूगी के अ दर ले जाकर गू गी
न उस पडोसिन को छोडा, तब कही उसकी सांस में सास आई । गू गी
मामा एव उल्टियों को तरफ इशारा करके कुछ बतला रही थी, तब कही
उस पड़ोसिन की समझ म आया ।

पडोसिन ने मामा के पास जाकर देखा, वह तो बहोश पडा था । गू गी
के पीछे पीछे आई भीड ने भी यह समझ लिया था कि माजरा क्या है ?
तुरत अस्पताल ले गय, जहाँ उसकी गभीर हालत देख भर्ती कर लिया
गया । चार घटे बाद होश आया । डाक्टर ने बताया 'यह अधिक पीने का
परिणाम है ।' खाना तो मामा को वहीं से मिल जाता था । गू गी उसके
पास दिन भर बैठी रहती थी बचारी रात्रि को ही घर जाती थी । वह

अपलक नेत्रों से मामा को निहारती रहती थी। जो शायद यह जानना चाहती थी कि अब तक वह कहा था और यह दशा कैसे हुई। किन्तु गूंगी होने के कारण पूछने मे असमर्थ रहती। अब वह इश्वर से उसके लिए मगल कामना ही करती थी।

इतना सब होने पर उसे मामा से कोई शिकायत नहीं। शिकायत थी तो इस बात से कि वह उसे बिना बताये कहाँ जाता है। वैसे वह भी इस बात को समझ रही थी, कि मामा का उसके प्रति व्यवहार बेरुखी और उपेक्षापूर्व हो गया है। गूंगी' सोच रही थी कि बेहोशी दूर होने के बाद भी वह उससे न एक शब्द बोला न कुछ पूछा। कम से कम यह ही पूछ लेता कि उसे यहाँ कौन लाया? नही पूछना तो दूर वह उसकी तरफ देखता तक नहीं। घटों इसी के पास बैठी रहती हूँ, लेकिन करवट के बल दूसरी ओर मुँह फेर कर लेटा रहता है। उसकी ऐसी बेरुखी मे गूंगी का हृदय तिलमिला जाता था। मन मे तो आता म भी यहाँ स चली जाऊँ। क्यों करूँ इसकी सेवा? यह भी तो मुझे और मरी बच्ची को मझधार मे छाड न जाने कहाँ गुम हो गया था। आया तो इस दशा म। लेकिन पति के प्रति छिप प्रेम और कत्तव्य ने उसे एसा न करन दिया। शायद इसीलिये कि वह एक भारतीय नारी और सस्कारा म पली स्त्री थी।

एक महीन तक मामा अस्पताल म ही रहा, जहाँ उसने उसकी बहुत सेवा की। घर स पहिनन के कपडे धोकर लाती। पलग को भली प्रकार स रखती। खाना खिलाती, पानी भरकर लाती आदि-आदि
दिनभर उसी क पास ही बैठी रहती, किन्तु मामा के दा मीठे बोल सुनन का तरस गई। जिसन एक बार भी यह नही पूछा–' खाना खाया या नही।" "रुपये पैसे की जरूरत हागी——।" "मीना कैसी है।" हलाकि उसका सभी घरों से काम छूट गया था। सुबह के समय जल्दी जल्दी किसी क घर काम कर जाती थी, जहाँ से उसे बासी रोटी-भात मिल जाता था, जिस खा वह अस्पताल आ जाती थी। अबाध बालिका मीना तो पडोसियो की दया का पात्र बनी हुई थी, जिस पर दया करके कोई भी खाना खिला देता था।

मामा स्वस्थ हो घर आ गया, किंतु गूंगी के प्रति कोई कृतज्ञता या सहानुभूति नहीं परोपकार की कोई भावना नहीं, अपितु वह उसे पूर्व की तरह प्रताड़ित करने लगा। 'गूंगी' ने अब तक बहुत सहा था, लेकिन अब सहन करना उसके लिये कठिन था। वह परिश्रम करके रुपया पैसों को बचाने मे लगी थी। थोड़े समय बाद ही उसे अपने कार्य में सफलता मिल गई।

एक दिन यह बात हवा की तरह फैल गई कि 'गूंगी' भाग गयी गूंगी भाग गयी ।' कहने वाला न था यहां तक कह डाला कि "वह किसी आदमी के साथ भाग गयी ।"

मेरे जहन में यह बात नहीं उतर रही थी कि वह 'गूंगी' जिसने पति की मार खायी' अनेक कष्टों को सहन किया और पति द्वारा दी गई सभी प्रताड़नाओं को भुलाकर बीमारी की अवस्था में उसकी इतनी सेवा की वो 'गूंगी' अब कहाँ भाग गयी ? भागने वाली होती तो पूर्व में ही भाग गयी होती। मुझे ख्याल आया कि वह कुछ दिनों पूर्व रुपये उधार मांगने आयी थी। तब मैंने तरस खा कर उसकी कुछ मदद भी की थी। शायद वह अपने माता पिता के पास चली गयी हो अब तो उसके दोनों बच्चे भी बड़े हो गये हैं।

संध्या के समय गूँगी की नानी उसे ढूंढती पूछती मेरे पास आई। मैंने उनसे कहा मामा उस बेचारी को बहुत मारा पीटा करता था, खाने को भी नहीं देता था, इसलिए वह मां बाप के पास चली गई होगी।

सुन, नानी बोली—' ऐसा नहीं बहिनजी। वा बदमास थी। सब जगह का काम करती थी, इसीकारण वर मार खाती थी।

मैंने पूछा– 'और उसकी बच्चों।"

नानी ने कहा—'उस भी साथ ले गई।'

उसके बाद मैं बहुत समय तक गूँगी के विचारों में डूब गई।

"काम करना बुरा है, शराब पीना नहीं। पर भरने के लिए जार ग्रो काम करती थी, ता इसम बुराई क्या है? आदमी भी खिलाए नहीं ग्रौरत भी कमाए नहीं, तो भला अपनी व बच्चा की भूख कैसे शात हो।"

गूँगी का गए थोड़े दिन ही हुए थे कि मामा की शादी की चर्चाएँ होने लगी—"मामा ने दूसरी शादी कर ली नई औरत को ले आया। जो दिखने में गूँगी से कम सुन्दर थी, किन्तु वह गूंगी नहीं थी।" अब मेरी समझ में आ गया कि मामा का गूगी तो तग करना, घर से भाग जाना। इन सब का एक मात्र उद्देश्य उस बेजुबान को तंग करना और भगाना था।

५

एक अनाम सम्बन्ध

उस दिन घर मे कोलाहल मचा था, सभी रो रहे थे। मम्मी का तो रो रोकर बेहाल था। उनके आसू तो थम ही नही रहे थे। आखें सूज गई थी। उनके पास बैठी स्त्रिया उन्हें समझा रही थीं, किन्तु वो चुप ही नही हो रही थी। अभी तक न जाने क्यो मेरे नेत्रा स आसू नही निकले थ। जे समझ नही पा रही थी, कि मैं रो क्यू नही रही हूँ ? आसू क्यो नही निकल रहे हैं। उस समय जो जिस काम को कहता, तुरन्त करती जा रही थी।

"प्रिया ! मम्मी को पानी पिला दो !"

"सुनो प्रिया ! पापा के वह कपडे ले आओ।"

'बेटी ! इधर आओ पापा के कमरे से कुर्सिया निकलवा कर बाहर लान म डाल दो।" —— और मैं एक आज्ञाकारी पुत्री के समान कार्यो को तत्परता से कर रही थी।

तभी किसी ने कहा—'प्रिया ! पापा की अगूठी घडी और गले स चन निकाल लो ! " जसे ही मैं घडी उतारने लगी, तभी मुझे उनका शरीर पत्थर समान लगा। हृदय म हलचल हुई और नेत्रो से बरबस आंसू वह निकल। मैं पापा से लिपट गई और जोर जोर से रो पडी। पीछे से किसी ने आकर मुझे हटाया' गले से लगाया और चुप कराया था। मैं शून्य नेत्रो से पापा को देखती और रो पडती थी। सभी स्थान पर तार दे दिए थे। मैंने भइया से कहा—'सुधा जी को भी भेज देना।'

सध्या समय सभी मेरे पापा को ले गए। मैं दयनीय नयना स उन्ह जाते देखती रही, रोक न सकी।

खिड़की से मैंने सुधा जी को आते हुए देख लिया। दरवाजे पर ही भइया खड़े हैं।

सुधा जी को देखते ही मम्मी उनसे लिपट गई और रो पड़ी। मम्मी कह रही थी, 'सुधा! यह क्या हो गया ? तू छोड़ कर क्या चली गई थी ? तेरे रहने से शायद ये बच जाते।'

मौसी जी ने इतना ही कहा—"मुझे पहले सूचित क्यों नहीं किया ? मैं आ जाती। अब रोने से क्या लाभ, धैर्य रखो।'

उस समय वह मम्मी को एक बच्चे की तरह चिपटाए हुए चुप कर रही थी। उस समय देखकर कोई यही समझता शायद यह मम्मी—पापा की ही संतान है। रात्रि में सुधा जी ने ही अपने हाथों से काफी बनाकर मम्मी को जबरदस्ती पिलाई थी। खाने के समय मम्मी के मना करने पर बड़े आग्रहपूर्वक खाना भी खिलाया था।

सुधा जी मेरे साथ पापा के स्टडी रूम में गई थीं। वहाँ की प्रत्येक चीज को बड़े गौर से देख रही थी। पापा की टेबिल पर रखा पैड, जो आधा लिखा था देख चौंकी उसे उठाया, पढ़ा। पढ़ते ही रो पड़ी, क्योंकि वह अधूरा पत्र उन्हीं के लिए लिखा था। रात्रि में वो मेरे साथ ही पापा के कमरे में सोयी थी। जब नींद खुली तो पाया वह जगी हैं। सामने दीवार पर टंगी पापा की फोटो टकटकी लगाए देख रही है। न जाने क्यों मैंने उन्हें रोकना चुप कराना उचित न समझा।

मम्मी भी सुधा जी के ही साथ सोती, बैठती, खाती पीती थी। उनके इस प्रेम को देख मैं दंग रह गई। सोच में पड़ गई यही वह मम्मी है, जो कभी सुधा जी के नाम से ही चिढ़ जाती थी, नाराज हो जाती थी। पापा से झगड़ा करने लगती थी। उनके इस व्यवहार से ही वे कमजोर होते जा रहे थे, और उस समय ही विदा हो गये।"

पापा जब बीमार थे, तब कितनी बार सुधा जी को पत्र डालने और बुलाने को कहा था, तब मम्मी ने ही न डालने दिया था। बुलाने की बाबत कहा था—' अभी तुम्हें कुछ नहीं हुआ है। डाक्टर कह रहे थे

दो तीन दिन म ठीक हो जायेंगे, देखभाल और दवाओं की जरूरत है।"

उस रात को भी पापा ने कितना कहा था– सुधा को तार देकर बुला लो मेरा कोई भरोसा नही ' मम्मी ने उ ह झिड़क दिया था। झगडा करने, चीखने चिल्लाने लगी थी। जिसे सुन पापा आपे से बाहर हो गये थे तभी दिल का दौरा पडा, तो वह हमेशा के लिए शा त हो गये।

आह! पापा कितने विद्वान थे, हर समय लिखते पढते रहते थे। छोटी उम्र म ही पी-एच डी भी कर ली थी, नौकरी भी कालेज म लग गयी थी। विवाह विज्ञान की छात्रा मम्मी स हुआ था। मम्मी पापा से एकदम विरोधी फिल्म देखना, सस्ती पत्रिकायें पढना, घूमना, फिरना, मेकअप करना और नई-नई साडियाँ खरीदना ।"

मम्मी को पापा की कभी फिक्र नही रही। वे क्या चाहते है? कैसा म द करते है? उ ह तो बस अपनी चि ता ही रहती। सुधा जी कितने सलीके से वस्त्र पहनती है। पापा की हर सुविधा असुविधा का ध्यान रखती थी। शायद पापा भी इसी कारण सुधा जी को अधिक पस द करते थे।

प्रिया को याद है जब वह आठ वष की होगी तभी से सुधा जी पापा के पास पी एच डी के लिए आती थी। घंटो पापा के पास बैठी रहती थी। 'शलवार कुर्ता और गल म दुपट्टा डाले कभी साडी ब्लाउज पहिने आती थी। कितनी अच्छी लगती थी, वो। जब भी आती मेरे लिए टाफी चाकलेट खिलौने लाती थी। मुझ बहुत प्यार करती थी। म भी उनको कितना चाहती थी।

पापा के साथ मैं भी उनके घर जाती थी, कितना मजा आता था। मम्मी कभी भी पापा के साथ घूमने फिरने नही जाती थी। पापा ने कितनी बार कहा, फिर भी शायद उनको रात्रि मे घूमना व्यथ लगता था, उस समय वह अपनी टी वी और उप यासो मे व्यस्त रहती थी। धीरे धीरे पापा सुधा जी के पास अधिक समय बिताने लगे थे। उनका बहुत बडा बगला था, जिसमें वह अकेली रहती थीं। कभी कभी उनकी माँ भी उनके पास

रहती थी। उनके बड़े भाई अपनी अपनी नौकरियों पर दूर रहते थे। सुधा जी की नौकरी भी पापा के कालेज में ही लग गयी थी।"

किसी ने पापा और सुधा जी के सम्बन्धों के बारे में मम्मी से न जाने क्या क्या कह दिया कि मम्मी पापा से उस दिन खूब लड़ी थी। सुधा जी को भी न जाने कितनी गालियाँ दी थी वो । पापा को भी बुरा भला कहा था। पापा ने उस समय इतना ही कहा था– "तुमने मुझे कभी समझा। मेरे मन को जानने समझने की कोशिश की, कि मैं क्या चाहता हूँ। कितनी बार कहा मेरे साथ वहाँ चलो इस तरह रहो तुमने मेरे मन को जीतने की कभी कोशिश नहीं की। तुम तो अपने आप में अधिक मस्त रहती हो, मेरी सुख सुविधा की कभी परवाह नहीं की।

उस दिन मम्मी खूब रोई थी। बहुत समय तक बड़बड़ाती रही थी। तभी से मम्मी पापा से नाराज और खिंची खिंची सी रहने लगी थीं। जब भी बातें करती व्यंग्यपूर्ण ढंग से करती थी। घर में जो भी आता था, उससे पापा के बारे में न जाने क्या क्या कहती। उन्हें नीचा दिखाने का प्रयास करती थी। इन सभी बातों के कारण पापा आने से कतराने लगे और अधिक समय सुधा जी के साथ उनके घर पर ही बिताने लगे थे।

भइया को जब पापा के इस अनाम सम्बन्ध का पता चला तब वह भी उनसे घृणा करने लगे थे। उन्हें बुरा-भला कहने लगे थे। घर में मैं और पापा ही सुधा जी से प्रेम करते थे।

मुझे याद है, एक बार मैंने पापा से कहा था– 'पापा सुधा जी हमारे साथ इस घर में क्या नहीं रहती? वो मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। मम्मी तो आपसे बहुत झगड़ा करती हैं, मुझे भी प्यार नहीं करतीं जब देखो डाँटती रहती हैं। आप मम्मी को ।"

मेरी इस बात को सुन मम्मी कितनी क्रोधित हो गई थीं, उन्होंने कहा था– 'बाप के साथ साथ अब बिटिया पर भी सुधा का जादू चल गया। वह भी उसके गुण गाने लगी। तुम मुझे क्या छोड़ोगे, मैं ही तुम्हें छोड़ दूँगी

मम्मी के इस रूखे व्यवहार से पापा बहुत चिंतित रहने लगे थे।

मम्मी से तो कुछ कहते नही थे, कि तु कुछ सोचते रहते थे, जिससे वे टूट गये थे । उस समय भी उ हे इसी प्रकार का दौरा पडा था, कि तु सुधाजी की सेवा से स्वस्थ हो गये थे ।

सुधा जी का ट्रा सफर इलाहाबाद हो गया था । उनके जाने के बाद पापा निराश से हा गये थे । बीमार भी रहने लगे थे । एक महीने की छुट्टियां लेकर सुधाजी के पास चले गये थे । जब वहां से वापिस आये थे, एक दम स्वस्थ और प्रसन्न । यहां आने पर मम्मी के रूखे व्यवहार ने थोडे समय मे ही उ हे पुन उसी दौर पर ला दिया, जहा से वे उनक पास गये थे । होश आने पर भी पापा ने उ हे कितना याद किया था । कई बार मम्मी से पत्र डालने को बोला था, कि तु उनके झगडालू और शकालु मन न न स्वीकारा ।

आज मेरा मन यह सोचने का विवश हो जाता है, कि मम्मी न इतने अ तराल बाद सुधा जी को पहिचाना, जबकि वे तो प्रारम्भ म ही हमारे घर आती ी पापा अधिक समय उनको देते थे उनके साथ बिताते थे । तब मम्मी ने कभी भी एतराज नही किया, कि वे अधिक दर तक उनके घर क्या रहते हैं । कि तु किसी और के कहने पर इतनी रुष्ट हो गई कि । यह सब तो वह पूव ही पहिचान गई थी कि पापा क्या । अधिक देर रात को क्यू आते ।

वैसे सुधा जी मम्मी से अधिक सु दर नही, फिर भी मम्मी स अधिक सलीकेदार, तौर तरीके की हैं । काली घनी लम्बी केश राशि, माथे पर चमकती गोल बिंदिया, ढग से पहनी साडी लम्बा पल्लू, मेचिग का ब्लाउज सब मिलाकर उ हे आकर्षक बना देता । जबकि मम्मी के पास मँहगी और अधिक साडियां, फिर भी न जान किस ढग म पहिनती हैं, कि उनके सामने अच्छी नही लगती । एक बार मने यही बात मम्मी से कही थी, कि तुम सुधा जी के समान साडी क्या नही पहनती ? वो ला इस तरह मे

।" पापा ने भी मेरी हां मे हां मिलाई थी । सुनन ही मम्मी आग बबूला हो गयी थी, बोली– "अच्छा अब साडी पहिनना मुझे तुम्हारी उस

गुजरातिन से और तुमसे शादी होगी। अब तो मैं तुमको हर बात में बुरी दिखती हूँ। अब तो तुम्हे ।''

सुधा जी कुछ दिन रह कर जब जाने लगीं थी, तब मम्मी कितनी रोई थी। शायद इसलिए कि उनका अब इस घर में आना न होगा। भइया भी जो पहले उनसे नफ़रत करते थे अब उनके पास बैठते, उनसे बातें करते रहते थे। मुझे तो वे बहुत अच्छी लगती थी। जाते समय उन्होंने मम्मी से कहा था– 'देखो अब अपने को सम्हालो, रोने से क्या लाभ। जो होना था, सो हो गया।'

भइया और मुझसे कहा था– 'तुम दोनों मम्मी का ध्यान रखना। उन्हें अधिक से अधिक प्रसन्न रखना।' उस समय मैं यही सोच रही थी, कि मम्मी के पास तो हम दोनों है, लेकिन उनके पास तो कोई नहीं। कितना सम्हाल लिया है, उन्होंने अपने आपको। समय से कितना समझौता कर लिया है।

भइया और मैं उन्हें छोड़ने स्टेशन तक गये थे, वहाँ भइया ने उनसे कहा था– प्रिया को आपके कालेज में एडमीशन मिल जायगा।'

सुनते ही वह बोली– क्या?'

मैं चाहता हूँ कुछ जिम्मदारियाँ कम हो जायें पापा के बाद अब आप की भी तो इस घर पर कुछ जिम्मेदारी है।

सुनते ही मुख पर प्रसन्नता की लाली दिखाई दी, बोली– जल्दी भेज देना।'

भइया ने उनके पैर छुये तो उन्होंने उन्हें गले लगा लिया और मुझे भी सीने चिपका लिया था। उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे एक अनाम सम्बन्ध बीत गया और उस अनाम को एक सम्बन्ध मिल गया।

६

घुटन

अगहन का महीना था, सुबह होने ही वाली थी, वातावरण में चारों तरफ अंधकार ही अंधकार छाया हुआ था, ठंड भी अधिक थी, ऐसे समय किसी का मन रजाई में से बाहर निकलने को नहीं चाहता था। सुबह के अभी पाँच ही बजे थे, कि बापू को अनचाहते हुए, अलसाये हुए पलंग से उठना पड़ा। हल को कंधे पर रख ठिठुरता काँपता खेतों की ओर चल पड़ा। रास्ते में घरों के दरवाजों को खटखटाता उन्हें जगाता— साथ लेता आगे चल दिया। सभी आपस में गपशप करते अपने अपने मुकाम पर पहुँच गये।

वहाँ पहुँच सभी ने अपने कंधे पर रखे हल को हाथ में ले खेतों में खोदना, मेड़े बनाना प्रारम्भ किया। सभी के खेत आसपास थे। कुछ के अपने थे और कुछ दूसरों की जमीन आधे बटाई पर जोत रहे थे। सभी लगन परिश्रम के साथ काम कर रहे थे। थोड़े समय पूर्व जो ठंड उनके शरीर में कपकपी उत्पन्न कर रही थी, वही ठंड अब शरीर में गर्मी ला रही थी। सभी मुँह से कुछ गा रहे थे—

मेहनत करके खाओ भइया,
ओ भइया—मेहनत करके खाओ।
मेहनत से ठंडी भागे,
मेहनत में है गुस्ती।
मेहनत ही रब है भया,
मेहनत ही जीवन।

मेहनत करके खाओ भया
मेहनत करके करो कमाई,
माटी से सोना पाओ
हम किसान माटी के बेटे,
माटी देती चपाती।
धरती पर फसलें लहलहाती,
देती हैं नव जीवन।
मेहनत करके खाओ
ओ भैया, मेहनत करके खाओ ।'

गाने के तेज स्वर के साथ साथ हाथ भी उसी तेजी के साथ चल रहे थे। सभी मे होड लगी थी कि किसके खेतो म ज्यादा अन्न होगा।

बोधू ३५ व० का नौजवान था। स्वस्थ, लम्बा तगडा, लम्बी लम्बी मूछो वाला छबीला था। अपने घर के नाम पर उसके पास ईंट गारे से बना बिना पलस्तर किया हुआ एक बडा कमरा था। जिसके ऊपर सीमेंट की चादर पडी हुई थी। उसके नीचे वो, दो छोटे बच्चे और पत्नी, जिसे पति से सदा यह शिकायत रहती है कि वो कुछ करता नहीं। उसके लिए अच्छे कपडे पहने नहीं बनवाता, बच्चो को अच्छे कपडे नहीं लाता। सभी के मद अपनी औरतो के लिए कुछ न कुछ शहर म लाते रहते हैं। पडोस की मुन्नियाँ को देखो 'उसका आदमी उसके लिए क्रीम, पाउडर–कजरा और जिसको न जाने क्या क्या लाता रहता है कल वह गुलाब, भग्गो, रज्जो सब औरतो को रेशमी साडी पोलका कितनी खुशी के साथ इतरा इतरा कर दिखा रही थी। सबके मरद कमाते हैं, घर म सामान लाते हैं। एक तुम हो कुछ नही कमाते, न घर म कुछ लाते हो।

बोधू मन म बहुत सोचता है, कि वह स्त्री को खुश रखे। उसके लिए ज्यादा नहीं तो एक दो साडियाँ ही ला दे। ठीक ही तो नाराज होती है म उसके लिए कुछ नहा ला पाता। लकिन मैं भी तो मजबूर हूँ, क्या करूँ? वस भी कज से लदे थे, किंतु पिता जी की इस लम्बी बीमारी म इतना

रुपया कर्जा हो गया कि उसको चुकाने मे अभी समय लगेगा।

बोधू ने वहुत उपाय किये कि किसी तरह महाजन के कज स छुटकारा मिल जाए। कितु कज था कि सुरसा के मुँह की तरह खुलता ही जा रहा था। दूसरा यह कि महाजन ऋण को द्रोपदी के चीर की तरह बढाता ही जा रहा था। इसी तरह कठिन परिस्थितियो से जूझता, अदम्य साहस का परिचय देते हुये ५–६ वष का अरसा व्यतीत हो गया। बोधू ने लाख कोशिश की कि वह स्त्री को सतुष्ट रखे, कि तु सम्भव न हुआ।

१० वर्षो मे वह कितना कुछ बदल गया। जो शरीर कई मन बोझा उठाने पर भी नही थकता था, वही शरीर अब थोडा काय करने के बाद थक जाता है।

बाधू ने एक दिन दपण म अपने प्रतिबिम्ब को देखा तो पहचान ही नही पाया कि यही वह १०–१५ साल पहले वाला बोधू है। स्वस्थ सुन्दर बाका नोजवान। जा अब दया का पात्र बना हुआ है। क्या यह वही आकर्षक सूरत है, जिस देख सभी मोहित हुय बिना नही रहे। लेकिन अब वही काली–कठोर–मुरझायी हो गयी है। ये बाल कहाँ जा रहे हैं ? जि ह सजाने सँवारन मे वह अधिक समय लगाता था।

तन पर पडे वस्त्रो की ओर उसने कभी ध्यान ही नही दिया था, कितु अब आईन में देख वह चौंक पडा। कुर्ता जिसमे अनेका छिद्र थे, सामने के एक दो बटन विलुप्त हो चुके थे। उसके प्रगैतिहासिक कुर्ते की बाँह फटकर किसी विदूषक सी दांत निपोर रही थी। सब कुल मिलाकर उसकी अवस्था १–२ धुलाई के उपरा त स्वगवासी होने वाली थी। धोती भी जीण हो चुकी थी।

उस दु ख हुआ कि अभी तक उसने अपने वस्त्रा की ओर देखा भी नही उसे फुरसत कहाँ ? स्त्री ठीक ही तो कहती है। "जिस प्रकार सिनेमा की तृतीय श्रेणी की खिडकी पर अटूट भीड़ एकत्र हो जाती है, उसी प्रकार बोधू के मन की खिड़की पर अनेक दुश्चि तायें एकत्रित हो गई।"

अब वह यही सोचता इस ऋण से कैसे उबरे, जिससे स्त्री बच्चो और

अपनी ओर ध्यान दे। बोधू इसी पेशोपेश म पड गया। अब वह सामर्थ्य से अधिक महनत करने लगा। जिसका परिणाम उसे शीघ्र ही भोगना पडा। फलस्वरूप वह लम्बी बीमारी से ग्रस्त हा गया।

"जिस तरह पेट म बच्चा रह जाने पर प्रमिका अपने प्रेमी को नही छाडती है, उसी तरह बीमारी भी बोधू को नही छोडना चाहती थी।"

पत्नी अभी तक आर्थिक परशानियों का सहन करती आ रही थी, कि तु आदमी की इस बामारी से एकदम बोखला गई। "रुपया-धेली पास नही इनका मज महाजन का कर्ज परिवार का खच कसे होगा सब?" इसी मानसिक पीडा म वह छटपटाती रही, घुटती रही। जिसके कारण वह भी रोगग्रस्त हा गई।

बाधू जो अब तक अपनी ही बीमारी म परशान था, अब वह स्त्री की बीमारी का ले परेशान रहन लगा। हकीमा का इलाज होता रहा, कि तु कोई लाभ नही।

एक दिन बाधू सध्या को जल्दी ही लौट आया। पत्नी पूव मे ही चार पाई पर सा रही थी वह भी पास ही दूसरी चारपाई पर लट गया। उसका सारा बदन दद म पीडित हो रहा था। शीघ्र वह भी सो गया। भोजन के समय लडके ने जगाया। जितना भाया पति पत्नी न खाया।

पति पत्नी दोना ही अलग अलग चारपाईया पर लटे हुये एक दूसरे को चुपके चुपके देख रहे थ। दोना का ही मन विकल था, छटपटा रहा था। दोना ही घुटन महसूस कर रह थे। दोना क ही हृदय म बरसा का समुद्र रुका हुआ था, लगता था अब यह अपन तट की सीमा का तोड देगा। कि तु दोना ही मौन थ। बाधू की यह इच्छा थी, कि पत्नी ही कुछ बोल और पत्नी की यह अ तिम लालसा थी कि आदमी पहल करे।

स्त्री अ दर ही अ दर टूट चुकी थी। अब अन्दर बाहर स शरीर भी जजर हा चुका था मस्तिष्क म न जान कसी उथल-पुथल हो रही थी और मन म उतनी ही हलचलें थी।

रात्रि का एक प्रहर बीत चुका था। आदमी भी सो गया था तथा दोना

लडके भी। स्त्री की स्मृति बिलकुल साफ थी उसके नयन म अतीत के चित्र घूम रहे थे —"कितने धूमधाम से वह गौन से आई थी। सभी न उसकी बहुत प्रशसा की थी। क्या कमी थी ? तब उसके पास ? सभी कुछ तो था। गहने, कपडे और आदमी का प्यार। अब वह सब कुछ १८ वर्षों म न जाने कहाँ खो गया । मेरे बच्चों का क्या होगा ? इनकी बीमारी का क्या होगा ? हे भगवान रक्षा करना, रक्षा करना।"

सुबह होने पर भी स्त्री नही उठी थी। बोधू यह सोच रहा था, कि वही उसे उठायेगी उलहाने देगी। स्त्री की झिडकियाँ कभी कभी तो उसे नुकीले बाण सदृश्य लगती थी। और कभी मीठी, जिन्हे सुनने म मे उसे आनन्द आता था। इसी आनन्द को लेने के लिए वह शान्त लेटा रहा, जबकि उसके समूचे बदन म दर्द था। दोनो लडके उठ गये थे तथा अपने अपने कामो म लग गये थे। छोटा लडका चाय बनाकर ला रहा था।

"बापू लो! चाय पीओ।"

"पहले अपनी मईया को दे।"

"मईया! ओ मईया! उठ! चाय बना दी और क्या करूँ ?"

आवाज देने पर जब वह नही उठी तब बाधू ने सोचा मैं ही कहता हूँ शायद वह मुझसे पीना चाहती हो। रातभर जो इच्छायें मेरे अन्दर उमड—घुमडती रही, घुटती रही, बाहर आने के लिये छटपटाती रही, शायद इसके दिल में भी हो। इसी कारण यह मान करके अभी तक लेटी हुई है। ऐसा सोच बाधू स्त्री की चारपाई के निकट आ उसे हिलाने डुलाने लगा। बोधू को उसका शरीर बर्फ की भाँति ठडा लगा। झट उसने नब्ज टटोली, जिसका कहीं भी नमोनिशान न था। बापू चीखता चिल्लाता गिरता पडता बीमारी की दशा म दौडा जा रहा था। देखने वालो की समझ म यह नहीं आ रहा था, कि बोधू को यह क्या हो गया।

हाँफता हाँफता किसी तरह वह हकीमजी के घर पहुँचा किन्तु थका भयभीत होने के कारण ठीक म न बोल सका। हकीमजी उसकी मनोदशा को कुछ हद तक समझ गये। तुरन्त ही बोधू की साइकिल पर बैठा चल दिये

उसको इस तरह जाता हुआ देख पीछे स्त्री पुरुषों की भीड जमा हो गई। सभी कारण जानने को उत्सुक थे कि तु किसी को कुछ बतलाने की स्थिति मे वह नही था । उस इतना अधिक सदमा पहुँचा कि उसकी बोलती बन्द हो गई थी ।

भीड के साथ जब बोधू घर पहुँचा, तब बच्चे भी नही समझ पाये कि बापू को क्या हो गया । वह दौड दौड़ अ दर गये और मईया को आवाज लगाई ।

"मइया उठ ! देख बापू को क्या हो गया ?" मईया तो चिरनि द्रा म लीन थी । जब नहीं उठी तब बच्चे बाहर आये और बापू से शिकायत करने लगे ।

"बापू ! मईया तो उठती नही ?" हकीमजी को साथ ले बोधू अ दर गया । हकीमजी न स्त्री का हाथ पकडते ही जान लिया कि वह बहुत देर की मर चुकी है । वह कुछ न बोल पीछे लौटने लगे । स्त्री को अपलक नयना से देखन वाला बोधू भी कुछ क्षण म स्त्री की चारपाई पर धम्म से गिर पडा, और फिर न उठ सका ।

कितना कारुणिक था यह दृश्य । दो पवित्र आत्माओं का मिलन पर मात्मा क यहाँ भी साथ जाना स्त्री पुरुष रो रहे थे । उसी भीड म दो छोटे अबाध बालक जोर जार स चीख रहे थे ।

ओ मईया ओ बापू कहाँ चले गये
हम भी साथ ले चलो

१

ऊँचे दरजे के लोग

मम्मी—मम्मी—मम्मी यह सब क्या हो रहा है। यह शोर कसा ? यह कहती लिली हड़बडा कर उठ बैठी और बडबडाती तेज कदमो से उसी दिशा की ओर भागी। कमरे म पहुँच वहाँ का जो दृश्य देखा तो दग रह गई। डैडी लडखडाते झूमते तेज कदमो से कमरे स बाहर निकल रह थे। मम्मी अपनी अस्त व्यस्त साड़ी को सभालती पल्लू स अपने को लपटे हुई खडी हो गई। कमरे म लगा हम सभी का फोटो जो कुछ समय पूव तक मेज की शोभा को बढ़ा रहा था, अब वही जमीन पर नि सहाय पडा था। जिसका कांच टूट कर छोटे छोटे अणुओ मे बिखर गया था।

'फूलदान' जिसम प्रतिदिन नौकर बगीचे स सु दर सुगधित फूलो को तोडकर उ ह एक आकार प्रकार देकर पत्तो और डालियो के साथ रखता सजोता था, अब वही गिर कर धराशायी हो गया है। कुछ टूटे गिलास और उसमे भरा पदाथ भी अब बिखर गया था, जिसकी गध वातावरण म फल-गई थी। इसके अतिरिक्त अ य वस्तुयें भी अब पथ्वी पर यत्र तत्र पडी थी। कमरे मे एक दष्टिपात करते ही सब नजारा समझ मे आ गया। लिली मम्मी के पास आ बोली—'मम्मी यह सब क्या है ?' मा बेटी के इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सकी। बस लज्जा भाव से सिर झुकाए खडी रही। उस समय माँ की वह स्थिति थी जो एक चोर की होती है, जिसे अपराध करत

पकड लिया गया हो। लिली ने देखा मम्मी आँचल मे हाथो को कसकर ढके, कुछ छिपाने का असफल प्रयास कर रही है। जबकि हल्के पील रग की साडी म लगे रक्त के दाग स्वय अपनी कथा कह रह हैं। लिली न मम्मी के हाथ से आँचल छुडाते हुए पाया कि मम्मी की कलाई से रक्त निकल रहा है। मम्मी के हाथो की चूडियाँ टूट गयी थी और उ ही काच लग जाने स हाथो म चार पाँच स्थानो से रक्त बह रहा था लिली मम्मी की यह दशा देख क्षोभ स भर गई। मम्मी का हाथ पकड अपने कमरे म लायी बिठाया डिटाल के पानी म रुई भिगाकर रक्त निकलने वाल स्थानो को धोया। मम्मी थीं कि बुत बनी बैठी रही किसी बच्चे की तरह जो रोने के सिवाय कुछ नही करता। लिली ने मम्मी घावो पर दवा लगाई, आसू पोछे। ठडा जल लाकर पीने को दिया और बोली-- मम्मी आज मेरे साथ यहीं पर सो जाओ।"

यह कहते हुए वह उठी, कमरे मे जल रही टयूब लाइट का बन्द कर नाइट बल्ब जलाया मम्मी को लिटाया, चादर उढाई और स्वय भी बगल मे लेट गयी।

लिली पलग पर लेटी यह सोच रही थी कि वह मम्मी से कैसे पूछ कि डैडी से आपका झगडा क्या हुआ ? नही—नही मम्मी को दु ख होगा। जैस तैसे आसू थमे हैं, फिर शुरू हो जायेंगे। घाव अभी ताजा है, कुरेदने से हरा हो जायेगा। अभी मम्मी का मन अशा त है, शात हो जाने पर कल ही पूछूँगी। लिली ने मम्मी को निहारा तो पाया कि मम्मी भी जग रही थीं। बोली –

"मेरी अच्छी मम्मी अब सो जाओ। मैं बहुत थकी हुई हूँ। जब तक तुम सो न जाओगी मुझे नीद नही आयेगी।"

माँ ने लिली के चेहरे को देखा, कुछ समझा और सोने म पुत्री की भलाई समझ पलकें बन्द कर ली।

लिली न आधे घटे बाद मम्मी को पुन निहारा तो पाया वह आना

कारी बच्चे की तरह सो चुकी थी । घड़ी का ओर देखा इस समय रात्रि के दो बज रहे थ । मम्मी तो सो गई, लकिन उसकी आंखों स नीद कोसों मील दूर जा चुकी थी । उस अपने बचपन का स्मरण आया "जब वह छोटी थी तब मम्मी उस तथा भईया को अपने पास लिटाकर कहानी सुनाती थी प्यार से थपथपाती थी बालों मे हाथ फिराती थी और कभी हमको अपने स सटा आनन्द से भर माथा चूमती थी । कितना आनन्द आता था हमको । हम बार-बार मम्मी स कहानी सुनाने को कहते थे । मम्मी परेशान होकर कहती थी अब नहीं ! सो जाओ ! कल सुनाऊँगी । भईया चालाक थे । मम्मी से और सुनाने की जिद करते थे । लाचार होकर सुनाती थी थपथपाती थी तभी हम सो पाते थे । उस समय मेरी आयु सात की होगी और भईया की आठ-साढे आठ के आस पास होगी ।"

लिली को याद आया जब मैं और भईया सो रहे थे तब रात्रि म एक दिन मेरी नीद खुल गई थी । पास म मम्मी का न पाकर मैने रोना शुरू कर दिया था । मेरी आवाज स भईया भी जाग उठे थे । वह मेरा हाथ पकड मम्मी के पास ले जाने लगे । एक दो कमरों म मम्मी को ढूँढ़ने के बाद उस कमरे की ओर बढ गये जहा स आवाज आ रही थी । वहाँ जाकर क्या देखा कि — — — — — डैडी मम्मी को डंडे स मार रहे हैं । मम्मी के सिर से रक्त बह रहा है,, वह रो रही हैं यह देख मैं तो जोर-जोर स रोने लगी थी और मम्मी स चिपक गई थी । डैडी शराब के नशे म न जाने क्या कह रहे थे । उन्हे समझने की समझ तब मुझम नही थी । अब उस समय की धुँधली आकृति स्पष्ट होती जा रही है—मम्मी के कुछ बोलने पर डैडी ने डण्डे को उनकी पीठ म मारा था, जिसका अग्र भाग मेरे बाजू पर भी पडा मैं जोर स चीख उठी थी । यह देख डैडी ने डंडा दिखाते हुए कहा था—"चुप नही तो ऐसे ही मरूँगा ।" बाजू म पडे डंडे के भय स मैं सुबकती सुबकती चुप हो गई थी । भईया जो अभी तक मूक दर्शक की भाँति चुपचाप खड़े थे और कुछ निर्णय न ले पा रहे थे कि रोयें या नहीं । तेज कदमों स आये और डैडी के रखे उस डंडे को लेकर भाग गये थे । उनकी इस क्रिया को देख

डैडी बड़े जोर से हँस पड़े थे। मम्मी शायद मन ही मन मुस्करा दी हं हाँ, मैं जरूर एक क्षण के लिये धीरे से हँसी थी, किंतु शीघ्र ही जोर से रो पड़ी थी। डैडी के डाँटने पर और डंडे की धमकी देने पर मैं चि पड़ी थी—

"कसे मारोगे, डडा तो भइया ले गया।"

मेरी बात सुन मम्मी और डैडी भी हँस दिये थे, इसके बाद मम मुझे चुप कराती हुई हमारे कमरे मे ले आई थी। सिर से निकल रहे र को रूई से पोछा, कुछ दवा लगाई, फिर मेरे पास लेट गई थी। मुझे थप थपाती हुई सुलाने का प्रयास करने लगी। मैं थी कि धीरे धीरे रोते-रोते ह सो गई। मम्मी सुबह कह रही थी कि मैं रात्रि भर सोते-सोते चिल्ला रही थी, कि 'मम्मी का मत मारो ।'—भईया भाग चला डडी डडे से मारेंगे ———।' —मुझे मत मारो———।" 'मम्मी मेरे हाथ मे बहुत जोर से डडी न मारा है———।" 'मम्मी हाथ मे बहुत दद है देखो———।' मम्मी रात्रि भर मेरे पास लेटी सहलाती रही थी।

सुबह के समय मम्मी ने मुझे गोद म लेकर कई बार चूमा था। मरी बाँह सूज गई थी। मम्मी ने स्वय सका था आयोडाक्स लगाई थी, ऐसा करते समय उनकी आँखें भर आई थी। उसे इतने वर्षों के बाद भी न जाने अब रह रह कर एक–एक बात याद आ रही थी।

मम्मी भी डडी के प्रहार की जो शिकार हुई तो कई दिनों तक उठ बैठ नही पाई। न ठीक से भोजन ही कर पाई थी। हम तो छोटे छोटे थे इस बात को समझ नही पाते थे। अब सब समझ मे आने लगा है। ऐसे समय नौकरानी जिसे हम बुआ कहते थे वह ही आकर मम्मी की सेवा

करती थी। मम्मी के न करने पर भी अपने हाथों से खिलाती थी।

इस घटना के कुछ दिनो बाद ही भईया को किसी दूर के स्कूल मे तथा बाद मे मुझे भी मम्मी ने रोते रोते बोर्डिंग मे डाल दिया था। वहीं आकर मम्मी मिल जाया करती थी। वह मुझे बहुत सी चीजें खाने को, पहिनने को खेलने को दे जाती थीं। प्रारम्भ मे बहुत रोती थी, किन्तु धीरे-धीरे आदत पड गई थी। तब से कल तक वहीं थी।

याद है, पाच-छै वर्षो तक न तो डैडी मिलने ही आये थे और न ही उनका कोई खत ही मिला था। बाद मे कई पत्र आए थे जिनमे यही लिखा होता था—"लिली बेटे! मन लगाकर पढना। किसी बात की चिन्ता न करना। परीक्षा मे प्रथम आना। प्रारम्भ मे ही मेहनत करो। नहीं तो अन्त समय यही कहा जायेगा कि 'अब पछिताए होत क्या? जब चिडिया चुग गई खेत।' जीवन मे तुम्हे बहुत कुछ करना और बनना है। किसी बात की चिन्ता न करना। रुपये पैसे की जरूरत हो तो लिखना———— सुनो लिली! इस बार तुम्हारी पिकनिक कहाँ जा रही है, लिखना, कश्मीर नैनीताल, शिमला, काठ माण्डू, आदि जहाँ भी चाहो घूम आओ———परन्तु अगे की तैयारी करना न भूलना———।"

डैडी के पत्रो को पढकर तो मन प्रसन्न हो उठता था। पत्र को बार बार पढ़ने को जी करता था। मैं उनके प्रति अटूट श्रद्धा रखने लगी थी। डैडी सामान्य लोगो से मुझे बहुत ऊँचे लगने लगे थे। तीन————चार बार मुझसे वहाँ मिलने भी आए थे। एक-दो घण्टे मुझे पास बिठाकर समझाते रहते। उस समय उनके नेत्रो मे आंसुओ की झलक स्पष्ट दिखलाई देती थी। उनके जाते समय मैं रो पडती थी और————डैडी का गला भर आता था। क्या यह वही डैडी हैं, जिन्हें मैं आदर्श पिता मानती थी। उन्होंने मम्मी को————।

आठ दिन पूर्व ही डैडी का पत्र मिला था—"लिली बेटे! अब तो

तुम्हारी परीक्षा समाप्त होने वाली है । समाप्त होते ही यहाँ चली आओ । तुम्हें देखे बहुत दिन हो गये हैं मन बेचैन रहता है । तुम्हारा भाई राहुल भी आ रहा है । इस बार हमारे साथ छुट्टियां मनाओ---- ।" पत्र पढ़ते ही फूली न समाई थी क्योंकि इस बार उन्होंने घर आने और साथ छुट्टियाँ बिताने को जो लिखा था । तभी से सोचने लगी थी डैडी से ये कहूँगी---- वो कहूँगी----यह शिकायत करूँगी ----। मम्मी से यह सीखूँगी-- ------समझूँगी------पूछूँगी----आदि । जाने क्या क्या सोचा था ।

आज ही आई और यह सब देखने को मिला । क्या यह दिखाने के लिए ही यहा बुलाया था ? सत्य है, कि "महत्ता की ऊँचाइयाँ दूर से अधिक लगती हैं पर नु पास पास पहुँचने पर धीरे धीरे शिखर बादलो के धुध से अलग होने लगता है और अतत आदर्श व्यक्तित्व मुट्ठी म आ जाता है । उसकी ऊँचाई नितांत सामा य हो जाती है ।" यही सब सोचते-सोचते न जाने उस कब निद्रा ने अपने आगोश म ले लिया ।

प्रात काल जब उसकी नींद खुली तो देखा सामने मम्मी खड़ी हैं जो अपने हाथों में काफी का प्याला लिये हुये है ।

ओफ मम्मी ! मैं कितना अच्छा सपना देख रही थी, तुमने मुझे नाहक जगाया ।

"बेटा ! आठ बज गये हैं ।"

"मम्मी ! भईया कब आ रहे हैं ?"

"यही दो तीन दिन मे आ जायगा ।" माँ वात्सल्य भरे नयनों से बेटी को कॉफी पीते हुये देख रही थी यह देख लिली ने कहा—ऐसे क्या देख रही मम्मी ?,

"कुछ नहीं ।"

'कुछ तो ।"

'कई वर्षों के बाद आज अपने हाथों की बनी कॉफी तुझे पीते देख मन म आनन्द और सतोष हो रहा है।"

"तभी तो काफी मे अधिक स्वाद है।" मम्मी वहा रहते रहते मैं तो बोर हो गई थी। सोचती थी कि वह कौन सा शुभ दिन आयेगा, जब तुम्हारे तथा डडी के साथ रहने का सुअवसर मिलेगा———मम्मी डैडी कहाँ हैं ?

'बेटी! वो सो रहे है।'

"मम्मी! आज मैं अपने हाथो से काफी बनाकर उन्हे पिलाऊगी।" लिली उठी रसोई म जाकर जल्दी से एक प्याला तैयार किया और डडी के कमरे म ले आयी।

डैडी-डैडी के कमरे मे ले आई।

डैडी-डडी उठिये, सूर्योदय हो गया।'

पाच छै आवाज देने पर भी वह तनिक भी नही हिले। यह देख वह घबरा गई। उन्हें हिलाया पुकारा तब कही वह जाग।

जागते ही जोर स चिल्लाने लगे, किन्तु बेटी को सामने देख बोले— मैं समझा ता, कि वो रात को देरी से सोया था, इसी कारण उठने मे देरी हुई।"

लिली का मन डैडी से बहुत सारी बातें करना चाहता था, किन्तु उनके रूखे व्यवहार के कारण वह कुछ न कह पाई। अपने कमरे म लौट आई। कुछ देर रहने के बाद बाहर आयी तो देखा मम्मी नहा धोकर बाहर खड़ी हैं।

'मम्मी! कही जा रही हो ?'

"नही बेटा! तुम्हारे आने म मन बहुत प्रसन्न है। आज मैंने अपने हाथो से नाश्ता बनाया है। आओ बठो।"

'डैडी नही खायेंगे क्या ?"

"वो चले गये हैं।"

"कहाँ चले गये मम्मी।"

"पता नही"

"क्या तुम्हें बताकर नही जाते ?"

"कभी नही।" यह कहते हुए मम्मी का चेहरा गम्भीर हो गया।

'मम्मी ! डैडी इतनी शराब क्यो पीते हैं ? तुमने उन्हे रोका नही।'

सुनते ही माँ का चेहरा उदास हो गया बोलीं-

"रोका था। उसी का तो यह परिणाम है यह कहते हुये उन्होंने अपनी पीठ और हाँथो को दिखाया।"

' मम्मी नाहक ही तुमने डैडी के अत्याचारो को सहन किया।" डैडी को छोड

"नही।" माँ लिली की बात को बीच म काटते हुये थोडीदर शांत रही फिर कठोर आवाज म बोली-"यह एक लम्बी कहानी है बेटी ! मैं मध्यवर्गीय परिवार की इकलौती लाडली स तान थी। पिताजी मिडिल स्कूल मे अध्यापक थे। मै प्रारम्भ म उनके ही स्कूल म पढी थी, इसी कारण सभी अध्यापक मुझे जानते थे, और प्यार करते थे। क्योकि मैं कक्षा म बहुत होशियार थी तथा ईमानदार सत्य बोलने वाल, मधुर भाषी, कमठो पिता की पुत्री भी थी - कुछ दर रुककर फिर बोली-

सभी मेरी बहुत प्रशंशा करते थे। मैं पिता से मन लगाकर पढ़ा करती थी। मेरी लगन और मेहनत का देख पिता जी अक्सर कहा करते थ ।

'देखना मेरी लाडली एक दिन बहुत बडी बनेगी। मैं तो इसे डाक्टर बनाऊँगा।'

अम्मा की दृष्टि मे अध्यापक बड होते थे इसलिए वो कहती 'डाक्टर नही मैं तो इस कालेज मे पढाने वाली, दूसरो को ज्ञान दने वाली अध्यापिका ही बनाऊँगी।"

पिताजी अम्मा से कहते- 'अरे पगली मास्टरी मे क्या रखा है। उसका

पहले जैसा स्थान कहाँ ? चाहे वह स्कूल में पढाये या कालेज मे, कहते उसे मास्टर ही ! आज का युग विज्ञान का युग है। सैकड़ो नित नई बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। हजारो गुदडो के लाल सूने मे ही बुझ जाते हैं। मैं चाहता हूँ हमारी बेटी बडी बनकर गरीब असहाय और लाचार लोगो के काम आय। उनकी मदद करे। अपने साथ-साथ हमारा नाम भी उज्जवल करे।"

विधाता ने तो मेरे नसीब मे कुछ और ही लिख रखा था। जब मैं दस वर्ष की हुई तब मेरी अम्मा की अकाल ही दरिद्रता मे मौत हो गई। पिता जी ने बहुत प्रयत्न किया कि वह किसी भाँति बच जाय, किन्तु सम्भव न हुआ।

अम्मा की मौत का पिता जी पर गहरा असर पड़ा और वह भी बीमार रहने लगे। धन की कमी के कारण साधारण दवायें चलती रही। घर के सभी काम का बोझ अब मुझ पर आ गया था। जिसे देख कभी कभी तो पिता जी अत्यन्त दुखी हो जाते। अकेले मे भगवान के फोटो के सम्मुख हाथ जोड कर कहते— "हे भगवान ! यह तूने क्या किया ? इतनी कम उम्र मे इतनी विपदायें क्या दे दी ? इस मासूम को " यह बतलाते हुए माँ के नेत्रो मे आँसू भर आये। कुछ रुककर–पुन बोलीं–

समय का चक्र बढ़ता गया और मैं सोलह साल की दस पास कर चुकी थी, वह भी सर्वोच्च अक लेकर प्रथम श्रेणी मे। मेरी खुशी का ठिकाना न था। पिताजी भी फूले नहीं समा रहे थे। सभी घर आकर बधाई दे रहे थे। इन्ही बधाइ देने वालो मे तेरे दादा दादी भी आये, किन्तु इनकी बधाई सभी से अलग एव अधिक खुशियो वाली थी। पिता जी तो आया, देख चकित रह गये। कहाँ यह ऊँचे दर्जे के लोग और कहाँ हम गरीब। बोले–

"आज गरीब की झोपडी मे कैसे तशरीफ लाये ?"

तेरे दादा जी मुस्कराये और कहने लगे–

"गरीब की झोपड़ी मे हीरा हो तब जौहरी को आना ही पड़ता है।"

पिता जी कुछ समझे नही बोले–

"हीरा ! मुझ गरीब मास्टर के पास। क्या उपहास कर रहे हैं मरा ! मालूम है, बेटी उ हाने हीरा किसे कहा था ? मेरे को।'

बाता का क्रम चलता रहा। पिता जी मेरे साथ सजाये स्वप्न का सुनाते रहे, साथ ही अपनी असमर्थता भी बतला रहे थे। तेरी दादी न मुझे मागा सुनते ही, पिता जी की वो अवस्था थी, कि अधा क्या चाहे दो आँखें गदगद हो गये। "होने स्वप्न म भी नहीं साचा था, कि बेटी एक दिन इतने ऊँचे घराने मे जायेगी और वह भी इस तरह।

उनके जाने क बाद पिताजी मुझसे इस परिवार की प्रशसा करने लगे क्योकि उनकी दृष्टि मे यह मध्यम वर्ग से बहुत ऊँचे दर्जे का अच्छा परिवार था। मैं भी यह सोचती रहती थी, कि जब इतने अमीर लोग हैं तब मुझ गरीब क या स क्या विवाह कर रहे हैं। मुझमे ऐसी क्या विशषता है? इ हें तो कोई भी अपनी लडकी देना चाहेगा, फिर इ होने मुझे ही क्या पस द किया। जानती हो बेटी ! उ त समय मेरे मन म यही विचार आये थे– 'कही लडके म कोई दोप तो नही ? लडका बिगडा तो नहीं।" लेकिन पिता जी के नाजुक हालाता को देखते हुए सब भगवान पर छोड दिया।

कुछ दिना म ही हमारी शादी सादगी के साथ हा गई और म इस परिवार की बहू बन गई। विवाह तो इ होंने करा लिया कि तु बेमन से। शादी की प्रथम रात्रि को ही साफ साफ शब्दा मे कह दिया था– 'यह शादी माता पिता न अपनी खुशी के लिए, अपने लिए की है, मेरे लिए नही। इसलिए तुम ! मेरे किसी काम मे बाधक नहीं बनोगी और अच्छी तरह से समझ लो, मेरी इन बाता को किसी स भी नही कहागी कहा ता अन्जाम अच्छा न होगा।"

सुनत ही मैं भयभीत हा गयी थी। मेरा शका सत्य ही निकली। मरी समझ म नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ ? पहल मैं यही समझती थी कि गरीब घर की तथा कम पढ़ी लिखी होना ही मेरा दोप है। पर तु बाद मे

पता चला कि तेरे डैडी किसी लडकी से प्यार करते थे, कि तु अपने पिता से विराध नही कर सकते थे। अधिक लाड-प्यार और रुपया की चका चौध ने इ है अधा बना दिया था। शराब जुआ, आदि अमीरो के गुण विरासत म मिले थे।

तेरे दादा दादी को जब इनकी करतूतो का पता चला तब वह जल्दी ही कोई गरीब घर की चतुर लडकी को ढूँढ इ हें विवाह के ब धन म बाधना चाहते थे। उनका दृष्टिकोण था, कि विवाहोपरा त यह सुधर जायगा। शायद तेरे दादा भी विवाह स पूव ऐस ही थे। यह मेरा दुर्भाग्य ही रहा कि मैं इनम काई परिवतन न ला सकी।

समय चक्र बदल रहा था। आकाश मे काली घटायें घिर रही थी। चारो तरफ घनघोर अ धकार छाया हुआ था। मूसलाधार वर्षा हो रही थी। तूफानी हवायें चल रही थी। मन अत्य त भयभीत हा रहा था। हृदय म अनको शकायें हो रही थीं। पलग पर देवी सदश लेटी तरी दादी अ तिम घडिया गिन रही थीं। उस समय मकान मे मेर और उनके सिवा अ य कोई न था। मैं रो रही थी। भगवान स दुआ माग रही थी। कमरे की शान्ति को भग करता हुआ स्वर सुनाई दिया।

"बेटी! भ तुमसे एक वचन लती हूँ, देगी"

उस समय मेरे पास 'हा' करने के सिवा काई चारा न था।

उ होंने मेरे सिर पर प्यार स हाथ फेरते हुए कहा—

'बेटी! कमल तुझे कितना भी परेशान क्यो न कर, लकिन तू घर छोड-कर नही जाना। तरे जैसी लक्ष्मी के जाते ही यह घर नरक बन जायगा। मुझे विश्वास है, एक न एक दिन तेरा व्यवहार अवश्य ही उसमे परिवतन ला दे गा।" यह कहते कहते वह हमशा हमशा क लिए चिर निद्रा म सो गई। माताजी के इस सदम को तरे दादा जी बर्दाश्त नही कर पाये और वो भी कुछ दिनो बाद चल बस। अब तो इनकी ज्यादतियाँ बढ़ गइ। किसी का अकुश न रहा। घर जब भी आते पीकर आते। मुझे देखत ही चिल्ला। उठते। "अपन बाप के घर चली जाओ! मुझे अकेला छोड दो।"

भारतीय सस्कारों मे पली और सास को दिये वचन को ध्यान कर ऐसा न कर सकी। बेटी! लडकी का शादी मे पूव पितृगृह और शादी के बाद पतिगृह ही उसका एक मात्र घर होता है मैं यही सोचती थी कि सतान के बाद ही कुछ परिवतन होगा • राहुल और तुम्हारे ज म के बाद भी जब कुछ परिवतन नहीं हुआ, तब मुझे तुम दोनो को इस घर से दूर भेजना पडा। मैं यही ठीक समझा कि तुम इस दूषित वातावरण से दूर स्वच्छ और प्रसन्नता पूण स्थान पर रहो। जहा तुम्हारे व्यक्तित्व का चतुर्मु खी विकास हो।

इसी बीच तेरे नाना जी का भी स्वगवास हो गया था, मैं नितात अकेली रह गई थी कि क्या करू। धीरे-धीरे मैंने किताबो से सम्बन्ध बढा लिया, फिर मेरा सूनापन न जाने कहाँ अ तर्धान हो गया। बेटी! अब मैंने एम ए कर लिया है, अपना अधिकाश समय पढने म ही बिताती हूँ।

तुम्हारे स्कूल स भेजी रिपोर्टो ने तेरे डैडी के हृदय म परिवतन ला दिया था। तुमसे मिलने भी गए थे, मुझे बाद म पता चला।

लिली मम्मी की कथा सुनत २ व्यथित हो गई। उसे ऐसा मालुम होने लगा कि हम ही डैडी के टिमटिमात दीपक म प्रेम की लौ जला सकते है।

हम डैडी के सून हृदय म प्यार की ज्योति जगा सकत हैं। उसका हृदय गद्गद हो गया और वह कह उठी हम डैडी को छोड अब कही नहीं जायेंग। उनका सहारा बनेंग।' वह यह बिलकुल भूल गई कि उसके नजदीक भी कोई खडा है। डैडी उसके समीप खडे प्यार से सिर पर हाथ फेर रहे थे। लेकिन वह तो अपनी विचार शृ खला मे डूबी हुई थी सहसा कह उठी "काश मेरे डैडी ऐसे हो होते यह सुन पीछे खड़े डैडी मुस्कराये और लिली की मनास्थिति को भापते हुए बोल– 'लिली बेटे! अब तुमको मुझसे कभी किसी प्रकार की शिकायत नही होगी। मैं तुमको वचन देता हूँ।"

—

८

त्रिशंकु

अगस्त का महीना था। कालेज मे पूरक परीक्षायें हो रही थी। समय दो से पाच का था। मैं अकेली कमरे मे घूम रही थी। इसी दौरान मिस चन्द्रकान्ता शर्मा नाम की अध्यापिका मेरे पास आई। और प्रसन्न मुद्रा मे बोली—

" आप अकेली हैं, दीदी !"

"हाँ" मैंने कहा। आज कल तो तुम दिखाई नही देती। ईद का चाँद बन गई हो।"

"नहीं तो ! घर मे बहुत काम था 'बिजी रही।"

"अभी अनमैरिड हो, मैरिज के बाद न जाने कितनी बिजी हो जाओगी।"

"ओह दीदी आप भी कैसी बातें करने लगीं।

मैंने कहा–"कहो कैसा चल रहा है ? तुम्हारा 'डिपाटमेंट।"

प्रसन्न नेत्रों से हँसती हुई बोली–सब अच्छा चल रहा है। मैंने अपना चार्ज वर्मा जी को सौंप दिया है।"

'अब तुम्हारे विभाग में पढाने वाले कितने हैं ?"

'अब हम चार हैं। पी० एच० डी० को गये आर० सी० वर्मा और एम० पी० शर्मा दोनो ही वापिस आ गये हैं।"

मैंने इन दोनो प्राध्यापको के बारे म बहुत कुछ सुन रखा था। बोली–

"सुना! आज कल तो तुम दोनो रसिको के मध्य राधा बनी हो।"

वह जोर से हँसी, कहने लगी—आपको कसे मालूम ?"

मैंने कहा—"हम साहित्य पढ़ाने वाले हैं, चेहरा देखकर ही सब जान जाते हैं।"

"सच कहा दीदी, मैं राधा बनूँ या नही लेकिन ये दोनों कन्हैया जरूर बने हुये हैं। मैं तो यूँ ही मजाक कर रही थी, किंतु अंधेरे मे ठीक बठ तौर का देख बोली—

"एसी क्या बात है, 'चंदा' ?"

'क्या बताऊँ दीदी, मुझे इन दोनों ने एम० ए० तक पढ़ाया था। बाद मे मेरी इसी कालेज म नियुक्ति हो गई। इसका मतलब यह तो नहीं कि इनका मुझ पर एकाधिकार हो गया।" मने कहा—"मैं समझी नही।"

बोली— दोनों ही मुझे बुरी दृष्टि स देखते ह। अतएव नयनों से घूरते रहते हैं। व यह चाहते हैं, कि मैं उनके इशारों पर चलूँ।"

"कोई तुम्हें घूरता है तो घूरने दो, तुम चीज ही एसी हो, तभी मुझे शेर याद आया—

"तुमसा कोई ज्यादा मासूम नहीं है।
क्या चीज हो तुम खुद तुम्हें मालूम नही है।"

"वह हँस दी। दीदी आप भी मजाक करने लगीं। उस समय मेरी तो जान ही निकल जाती है। गुरु होने के कारण मैं उनका आदर करती हूं। नही तो ।" मन बात की गहराई म जाने की कोशिश की। और उसे कुरेदा ।

कहने लगी—दोनों ही मुझे एक दूसरे से बात करने को मना करते हैं। अगर कमरे म शर्मा जी बठे हो। मेरे सिवा कोई और न हो तो व कहेंगे—

"सुनो चन्दा ! तुम वर्मा जी स बात मत करना ? वह आदमी ठीक चाल चलन का नहीं है तुम्हारे प्रति वे अच्छे विचार नहीं रखते ।"
जबकि वर्मा जी हेड हैं। उनके बारे म शर्मा जी के यह विचार हैं। जब कमरे म वर्मा जी और मैं बैठे हों तो वे कहेंगे—

'सुनिये मैडम चन्दा ! तुम शर्मा से बात बिलकुल मत किया करो । वो आदमी अच्छा नहीं है । तुम्हें जिस चीज की जरूरत

हो, मुझसे कहना प्रेटिकल मे कोई परेशानी हो तो नि संकोच कहना। म तुम्हारी पूरी पूरी मदद करूँगा।" अब आप ही बतलाइए दीदी, ये मुझसे इस प्रकार की बातें क्या करते है।

"तुमने फिर क्या कहा?"

"कुछ नही, मैं एकाग्र भाव मे उनका उपदेश सुनती रही, मन मे सोचती रही, कैसे हैं, ये गुरू। इन्हे क्या कहना चाहिये ।"

मने धीरे से टोका—'क्या कहना चाहती हो?" बोली– मन तो ऐसा करता है, 'सर' न कहकर नाम सम्बोधन करूँ। क्योकि ये गुरू बनने योग्य नही।

'सच दीदी, ये निम्न कोटि के इ सान है। यह कहते वह जाने लगी। मैंने कहा–'फिर कब मुलाकात हो रही है।' वह मुस्कराते हुये बोली–'बस' अब होती रहेगी।'

उनके जाने के उपरा त कुछ समय तक मेरे नेत्रो मे 'शर्मा' और 'वर्मा जी' का रेखाचित्र घूमता रहा, म न जाने कब तक विचारो मे डूबती रहती तभी किसी छात्रा ने पुकारा–"मैडम–कॉपी ।"

लम्बे अ तराल के बाद मेरी उनसे फिर मुलाकात हुई। दिखने मे उदास, मुरझाया चेहरा था। मैंने कहा–'अस्वस्थ लग रही हो क्या बात है।' 'हाँ' बीमार थी, अब ठीक हूँ, कमजोरी हैं।"

मने कहा–"तुम बहुत बीमार रहती हो, शादी क्यो नही कर लेती? सब बीमारी दूर हो जायेगी।"

वह हँसने लगी बोली–'शादी से बीमारी, कैसे दूर हो जायेगी?"

"देखो च दा! कुछ बीमारियाँ मनोवैज्ञानिक होती है जो नाना प्रकार कष्ट देती हैं तुम तो स्वय मनोविज्ञान पढ़ाती हो ।" शा त कुछ सोचती हुई बोली—आपकी इस नवीन थ्योरी के बारें म सोचेंगे, कभी।'

'कभी क्या? अभी।'

"आपको एक बात बताऊ दीदी, यह कहते कहते मुस्कुरा दी बोली–

"मेरे कालेज न आने पर शर्मा जी घर आये थे। पापा से बातें की।

पापा ने बतलाया वह बीमार हो गयी है, तब बहुत हमदर्दी दिखाने लगे।"

'वर्मा जी भी आये थे, वह तो पापा से मेरी न जाने कितनी प्रशंसा लगे। शर्मा जी ! आपकी लड़की बहुत होशियार है। खुशमिजाज है। कभी भी चेहरे पर शिकन नहीं। जब देखेंगी हंसती मुस्कराती अच्छी लड़की है ।" सच दीदी उनकी बातों को सुन हंसती रही। उनके जाने के बाद भी बहुत समय तक बातों को याद कर-२ के हँसी आती रही।'

आज मैं अपने पीरियेड के समय पर ही आई देखा कमरे में अकेले शर्मा जी बैठे हैं। नमस्ते की। रजिस्टर लेकर जाने लगी।

कहने लगे–' सुनिये मैडम ! कहाँ जा रही हैं ? आप।"

'मेरा पीरियेड है, 'सर'।

'मारो गोली पीरियेड को !

"आओ बैठो ! कुछ सुनो ! कुछ सुनाओ ।"

"अभी बीमारी से उठी हो सिरशूल हो जायेगा।"

"मैं बैठ गई।"

"देखो चन्दा ! मेरा दिल तुम्हें बहुत प्यार करता है। तुम्हारे न आने पर सूनापन महसूस करता हूँ। मन कहता है, तुमसे ढेर सारी बातें करूँ। तुम कोई गलत न समझ बैठना । वैसे तुम मेरी छात्रा रह चुकी हो।"

'कुछ देर चुप रहने के बाद पुनः बोले—

"तुम मेरी बातों को गुप्त रखो, मैं तुम्हारी।"

"अच्छा, तुम्हारा शादी के बारे में क्या ख्याल है। वैसे घर में अब तो तुम्हारा ही नम्बर है । शादी कर-लो, और जिन्दगी के मजे लो ।"

'मेरी समझ में न आया, ऐसी कौन सी बातें हैं, जिन्हें ये गुप्त रखेंगे। मन में आया पूँछू किन्तु भय लज्जा और संकोच ने पूछने न दिया।"

मन कहा–सुनो चन्दा ! इस समय तुम त्रिशंकुवत' बनी हुई हो जिस प्रकार राजा हरिश्चन्द्र के पिता स्वर्ग और पृथ्वी के बीच उल्टे लटके हुये थे, उसी प्रकार तुम वर्मा जी और शर्मा जी के बीच लटकी हुई हो।"

जोर से हँसी, 'बोली–'दीदी आप तो न जाने किन किन से उपमायें देने लगी। सच, आपसे मिलकर मन प्रसन्न हो जाता है। अच्छा अब चलूँ।"

उनके प्रस्थान के बाद मैं सोच में पड़ गई। मन में अनेक विचार आये। 'मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है? उसके वशीभूत हो वह अपने अमूल्य 'चरित्र' का भी हनन कर देता है, और अपने स्तर को स्वयं गिरा देता है । आखिर क्यों?" "गुरु का स्थान तो भगवान से भी बड़ा होता है, ऐसा सभी विद्वानों ने स्वीकारा है। स्वयं कबीरदास ने कहा है–

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।"

वही गुरु वर्तमान समय में अपना बौद्धिक पतन कर चुके हैं किन्तु ऐसे गुरु नगण्य ही होते हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण तालाब को गंदा कर गुरु जनों को कलंकित किया है––

मिस चन्दा को ही देखो, लम्बी, छरहरी, गौर वर्णा, बड़ी बड़ी कजरारी आँखें आकर्षक हैं। उसकी हँसी उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बना देती है।

ऐसे व्यक्तित्व की ओर कोई भी आकर्षित हो सकता है सौंदर्य की ओर आकृष्ट होने के लिए उम्र का कोई तकाजा तो नहीं यह ठीक है, किन्तु जब व्यक्ति स्वयं विवाहित हो, उसके बड़े बड़े बच्चे हों, तब उसे इस प्रकार का कार्य शोभा नहीं देता। बहुत समय तक मेरी उनसे मुलाकात नहीं हुई। २–३ महीने बाद वह मुझे दिखलाई दी। पूछने पर पता चला कि वह बाहर गई हुई थी। मैंने कहा—"कोई विशेष प्रयोजन से।"

'हाँ', यह कहते हुए बैग में से एक लिफाफा निकाला।'

'शादी का है?"

"देख लीजिये। आपने सोचने पर मजबूर कर ही दिया।"

"आज नहीं कल, वह तो तुम्हें करनी ही थी। फिर मुझे क्या दोष देती हो।"

"आपने विभाग में कार्ड दिये या अभी नहीं।"

'देकर ही आ रही हूँ।'

'वर्मा जी भी पूछ रहे थे–'कहाँ चली गई थी 'मैंडम'। घर पर तुम्हारा भाई मिला अधिक बात न हो सकी। कुशल तो हो। तुम्हारे न आने से बहुत चिंता सता रही थी।'' बाहर से ममा जा का आते देख वह इतना ही बोल पाये 'कहीं तुम और बात अधूरी रह गई।''

'कमरे मे शर्मा जी मुझे ऐसी दृष्टि स देख रहे थे, जैसे मैं अजायब घर से आई हूँ कभी देखा न हो। तभी मैंने लिफ़ाफा निकाल दोनो का आर कर दिया, जिसे देख कहने लग—

'ये क्या है 'मैंडम' ?'

'मैं कुछ बोल न सकी चुप रही।'

''अन्दर का पढते ही चेहरा पीला पड गया झेंप से गये दोना फैशनेबिल हसी हसते हुये बोले–

'तुमने अभी तक बतलाया नहीं छिपाये रखा कमाल है ।''

'जरूर आइये सर।'

'सच दीदी ! उनके लटके हुये चेहरो को देखने मे लुफ्त आ रहा था।''

'मैंने उ ह छेडते हुय कहा–'तुम बडी निर्मोही हो द्वापर म कृष्ण गोपियां को तडफता हुआ छोड मथुरा चल गये थे कलियुग की राधा श्याम को व्याकुल छोड चली।''

'सुनते ही खिलखिलाकर जोर से हँस पडी। बोली–'बस रहने दो दीदी बोर न करो।''

उनके जाने के बाद मैं उनके त्रिकोणी प्रेम के बारे म सोचने लगी' ।

६

सुलगती आग

सावन का महीना था। आसमान काले – काले बादलो से भरा था। वर्षा की रिमझिम फुहारें बरस रही थी बीच-बीच म घोर गर्जना करती हुई बिजली कौंध जाती थी। अनुमान लगाया शाम के यहा कोई पाच-छ बजे होगे। अपने चारो ओर नजर दौडाई तो अपने आप को अस्पताल के प्राइवेट रूम म लेटी पाया। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वह गहरी तथा लम्बी नीद स जागी हो ! उठने की कोशिश की तो सिर बहुत भारी लगा। हाथ से छूकर देखा वहाँ पट्टी बधी थी रूई की अधिकता के कारण बहुत मोटी लग रही थी। सिर दद स फटा जा रहा था। मन हुआ कि दोनो हाथो से उसे उतारकर फेंक दे, पर दूसरा हाथ उठा ही नही। दाहिने हाथ की हथेली व कोहनी पर भी पट्टी बँधी थी चेहरा खिचा-खिचा सा लग रहा था ऊगलियो म छूकर देखा, दाहिनी आख के ठीक नीचे भी एक पट्टी चिपकी हुई थी। कमर म भी भयकर पीडा हो रही थी।

'अम्मा ! ' मैंने क्षीण स्वर मे पुकारा। उस नीम बेहोशी की अवस्था म भी मैंने समझ लिया कि मेरे शरीर पर प्यार स हाथ फिराने वाला कौन हो सकता है।

"अम्मा !"

क्या है बेटी ? कैसा जी है अब ?"

'सिर फटा जा रहा है अम्मा। शरीर म बहुत दद हो रहा।"

'टाँको के कारण सिर म दद होगा। थोडी देर बाद आराम आ जायेगा।"

"टाँके ? मुझे टाँके लगे है अम्मा ?"

हाँ आठ टाँके आये हैं। भगवान की मेहरबानी थी कि तेरी आँख बच गई।"

"अम्मा हाथ म भी जोरो से दद हो रहा है।"

सोने की कोशिश कर बेटा। भगवान का नाम ले।"

मनु ने देखा कि यह कहते हुए अम्मा की आँखो से अश्रु ढुलक पड़े और गला रुँध गया। मेरे कारण आज अम्मा को यह दु ख देखना पडता। तभी भैय्या की आवाज सुनाई दी—

"क्या, मनु को होश आ गया?"

अम्मा के हाँ' कह देने पर वह कमरे म आए और बोले—

"मनु! तुम किसी प्रकार की चि ता मत करना, हम सभी तुम्हारे साथ हैं। अब तुम्हे डरने की कोई जरूरत नही, तुम अपने ही घर म हो। भगवान की बडी कृपा है कि तुम बच गई। हम तो बहुत डर गए थे, कि तुम्ह कुछ हो न गया हो। मैं समय पर न पहुँचता तो न जाने कितना खून निकल गया होता। वो तो तुम्हे मारना ही चाहते थे कमी क्या छोडी ।"

मनु मारने वाले से बचाने वाला बडा होता है। उन्ह अपने धन का घमण्ड है वो इन्सान की कोई कीमत नही समझते ।"

मनु त मय पूवक भैय्या की बातो को सुनती रही मुख से एक शब्द न निकला। अब उसमे इतनी हिम्मत नही थी, कि भाई की तरफ देख सके। वह तो एकटक कमर की छत की तरफ देखती रही। भैय्या के चले जाने के बाद अपने बाँये हाथ से सिर तथा हाथ को छूकर देखा, वास्तव मे आज उस असहनीय पीडा हो रही थी। मन मे आ रहा था, कि वह जोर-जोर से रोये। चिल्ला-चिल्ला कर कहे कि मेरा कसूर क्या है, लेकिन उसकी बातो को सुनने वाला वहाँ कोई न था।

मनु को याद आया कि विवहोपरान्त जब वह ससुराल गई थी तब मुझ और साथ आय दहेज को देखत ही सास चोट खाई नागिन की तरह क्रोधित हो उठी थी। घर आये मेहमानो का भी लिहाज नहीं रखा था। मेरे माता पिता, खानदान और मुझे न जाने कितनी गालियाँ दी थी मैं तो

इतनी ज्यादा भयभीत हो गई थी कि रोने के सिवाय कुछ समझ म नही आ रहा था। किसी के पूछने पर मैं कोई उत्तर नही दे पा रही थी। चन्दर के समझाने पर भी सास का क्रोध शा त नहीं हुआ था, बल्कि मुझे और जली-कटी सुनाने लगी थीं। मुझाये चेहरे से किस तरह चन्दर ने कहा था—

'तुम माँ की बातो का बुरा न मानना इनका तो स्वभाव ही ऐसा है।"

उस समय मेरी समझ मे यह न आ रहा था कि किसका स्वभाव अच्छा है और किसका । दोनो ननदो ने भी माँ के स्वर मे स्वर मिलाते हुय कहा था—

"जो हुस्न की परी है हमारी भाभी जिस पर हमारे भैय्या फिदा हैं।"

यह सुनते ही मैं तो लज्जा से गड गई थी। उस समय समझी नही थी, लेकिन बाद मे समझ आया कि यह मुझ पर व्यग किया है।

पिताजी न कितना सत्य ही कहा था-

'मनु तुम अपनी मर्जी से विवाह कर रहीं हो, तुम्हे पूरा विश्वास है कि च दर तुम्हारा साथ देगा। बेटी वो अमीर परिवार का इकलौता बेटा है। घर म चन्दर की माँ की ही चलती है। सुना है, वह जीभ की बहुत तेज औरत है। बेटी, उसके और हमारे परिवार म बहुत अन्तर है। मुझे डर है कही तुम परेशान न रहो।"

"नही पिताजी चन्दर ऐसा नही है, रही मा की बात, उन्हे तो मैं अपनी सेवा से मोहित कर लूगी।"

पिताजी ने चन्दर को भी घर पर बुलाया था, दोनो ड्राइग रूम मे बहुत देर तक बातें करते रहे बेटा! तुम अमीर हो हम तुम्हारे बराबर कहाँ ? ।'

'नही पिताजी ऐसी कोई बात नही। प्यार गरीबी अमीरी नही देखता। आप मझ पर यकीन करें, मनु को मैं कभी शिकायत का मौका नही दूगा। "

'बेटा सुना है तुम्हारे घर मे तुम्हारी माँ की चलता है, तब वह इस रिश्ते को स्वीकार करेगी। मैंने मनु को बहुत ही लाड प्यार से पाला है। कभी किसी भी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होने दिया। वैसे मनु बेटी बहुत समझदार और तेज बुद्धि वाली है।

नहीं पिताजी ! माँ तेज जरूर हैं, लेकिन दिल की बहुत अच्छी है। जब से पिताजी का स्वगवास हुआ है तब से कुछ ज्यादा ही चिडचिडाहट आ गई है। आप चि ता न करें। मनु को रे यहाँ कोई परेशानी नही होगी।"

पिताजी न तो बाद म भी कहा था- बेटा ! तेरी सास बहुत तेज है, समझदारी से काम लेना "

आह ! कितना दद हो रहा है। ऐसा लगता है दम निकल जायेगा।

"अम्मा ! वो नही आय।'

'कौन बेटी ?'

'च दर माँ !"

'बेटी ! वह तुझे क्यो देखने आयेगा।'

'क्या "

'क्यो क्या ? वह तो तुझसे पीछा ही छुडाना चाहता है ताकि अमीर घर की लडकी स निश्चिन्त होकर शादी कर सके।"

यह सुनकर मनु को बहुत ठेस पहुची। वह ऐसी शा त हो गई जैसे उसकी जबान पर काठ मार गया हो।

शादी के दो महीने बाद से ही सास की कड़वाहट और व्यग वचन सुनने को मिले तब भी मैंने कुछ न कहा। सोचा एक न एक दिन इन्हें अपने किये का पछताना जरूर होगा यह सोचकर मैं शा त ही रहती उस दिन सास ने कितना फटकारा था धमकियाँ दी थी और ये भी माँ की तरफ से होकर बोलने लगे थे। यह देख मैं तो सकते म आ गई थी कि जिस आदमी पर विश्वास किया, जिसे अपना माना, जिस पर अपना तन, मन, धन न्योछावर किया, वही आज गिरगिट की तरह रग

बदल रहा है' उसने ठीक ही कहा है कि शैतान की जबान का कोई भरोसा नही। वह न जाने किस पल मे बदल जाये।

अब मनु को अपना भविष्य अधकारमय दिखाई देने लगा। मन के किसी कोने म छिपे स्वाभिमान ने कहा—

'मनु ! तू उस मूख के लिये क्यो रोती है जिसने तुझे अपनाकर ठुकराया। जिसने सदव धोखा देना ही अपना कम समझा। जो अपने स्वाथ मे लिप्त रहा जिसने तेरे साथ पशुता का व्यवहार किया मारा-पीटा और जान से मारने की कोशिश की तू ऐसे अमानुष के लिये रोती है। नहीं, मनु नही। अभी भी कुछ नही बिगडा, अभी भी समय है कुछ बनकर दिखला। देखना एक न एक दिन वह अवश्य शर्मिन्दा होगा ।''

मनु को स्वस्थ होने म पाच-छँ महीने लग गये थे। अब वह पूणत टूट चुकी थी। भाई भाभी पर ही आश्रित थी। इसी बीच प्रिय सखि के द्वारा ज्ञात हुआ कि च दर की शादी किसी दूसरे शहर से तय हो गई है। मन म बहुत क्रोध आया। तालाक के सम्ब ध मे भी नोटिस आया था, भाभी ने उस दिन बतलाया था। सुन कर जरा भी दु ख नही हुआ, क्योकि अब उस व्यक्ति से कोई लगाव ही नही रहा था।

सुबह अखबार पढते समय अचानक दृष्टि उस विज्ञापन पर पडी जहाँ नर्सो की ट्रेनिंग का लिखा था। मन में विचार आया क्यो न इसी को किया जाये। यह काय भी अच्छा है। इस तरह दूसरो की सेवा करते हुये मेरा समय भी अच्छी तरह व्यतीत हो जाया करेगा। मन म दृढ़ निश्चय किया और बिना किसी से पूछे चुपचाप अपना आवेदन तथा बी० ए० की मार्कशीट के सहित भेज दिया।

एक दिन आया ने आकर बतलाया कि च दर का विवाह हो गया है, बहू बहुत सा दहेज मायके स लाई है। लडकी दसवी पास है। मन क और उसके परिवार के प्रति घृणा हो गई थी, अनेक तरह के भाव उत्पन्न हो रह थे। मुख उदास हो गया था। इसी समय पोस्टमैन से अपना नाम सुनते ही दौडी। लिफाफा खोला तो बहुत खुशी हुई क्योंकि ट्रेनिंग मे दाखिला मिल गया था। होस्टल मे ही रहना था। रहने, खाने तथा पढ़ने क लिये अभी रुपये जमा करने थे। इतने सारे रुपये वह कहाँ से लायेगी। कही भइया देने से इन्कार न कर दें भाभी झगडा न करें माँ नाराज न हो यह सब सोच हृदय डरने लगा।

सध्या जब सभी कमरे में बैठे टी वी देख रहे थे, तभी मनु ने सभी के सम्मुख अपने मन के विचारो को विनम्रत पूवक कह दिया। थोडी दर के लिये सन्नाटा सा छा गया। हृदय धक धक करने लगा। उसे ऐसा लगा कि उसकी सारी आशायें धूमिल हो जायेंगी। लेकिन यह उसका भ्रम था। तभी भइया का स्वर सुनाई दिया—

"ठीक है जसी तुम्हारी मर्जी। ह म कोई एतराज नहीं। जिसमे तुम खुश रहो उसी म हमारी खुशी है।"

भाई क मुख से यह सुनत ही मनु का हृदय प्रसन्नता स उछल पडा। खुशी के मारे रात म बहुत देर तक नींद नहीं आई। मन मे तरह-तरह के विचार उठते, नइ नई कल्पनाये ज म लती, लकिन अब मन न कुछ और ही ठान लिया था कुछ और ही प्रतिज्ञा कर ली थी।

सूर्योदय हो चुका था और वह अभी तक नही जागी। यह देख भाई ने नीचे से ही आवाज दी—

"मनु! आज एडमीशन लेने जाना नही है।"

यह सुनते ही मनु को ऐसा लगा जैसे कोई सु दर खिलौना हाथ म आने से पूव ही टूट गया हो। यह देख वह जोर से चीख उठी चीख सुनकर माँ, भाई दौड़े। मालूम हुआ कि कोई स्वप्न देखा था, दिल

जोर जोर से धड़क रहा था, सांस भी तेज गति से चल रही थी। मनु की यह स्थिति देख भाई ने मजाक मे कहा "जब तुम्हारा स्वप्न से यह हाल है, तब तुम नस कैसे बन ।"

भाई की बातो को पूरी सुने बिना ही कह दिया—

'नहीं मैं जरूर बनूंगी।"

उसके ऐसे स्वाभिमान को देख भाई ने कहा—"नौ बजे तक तैयार हो जाओ, आज तुम्हारा एडमीशन करा देते हैं।"

मनु को नस की ट्रेनिंग मे एडमीशन मिल गया था, वह बहुत खुश थी। होस्टल म रहने जाना है इसलिये अपनी सभी तैयारी बडी सूझबूझ से कर रही है। माँ भी याद दिलाती जा रही थीं–

'मनु, गरम कपडे रखे, चादर रख ली कघा, तेल, शीशा रखा कुर्त्ता-सलवार, साडी रखी तौलिया रख लिया"

"सिरदद और हाजमे की गोलियाँ भी रख लेना "बहू बेसन के लड्डू एक डिब्बे मे रख दे नमकीन भी ज्यादा रख देना। मनु को अच्छा लगता है, पता नही वहाँ कैसा खाना मिलता है सूखे मेवे भी रखना, भूल न जाना ।"

माँ तो मनु की ऐसी तैयारी कर रही थी जसे बेटी को पढ़ने नही ससुराल भेज रही हो।

घर म बेटे के आते ही पूछा, बेटा, धोबी के यहाँ से मनु के कपडे लाया नही जल्दी जा उसे कल जाना है।"

रात्रि आंखो म ही व्यतीत हो गई। उसे पता ही नही चला कि उसने थोडे समय के लिये भी झपकी ली हो। सुबह सभी से बिदाई ली और चल दी।

होस्टल और स्कूल का नया-नया वातावरण सभी कुछ उसे अजीब लग रहा था लेकिन मन मे उमग थी, जोश था। भावी जीवन की सुखद कल्पनायें थी। इसी कारण वह हर स्थिति का जमकर मुकाबला कर रही थी। अधिक देर तक अध्ययन करती, क्लास मे भी मन को एकाग्रचित

करके समझने की कोशिश करती। किस तरह तीन वर्ष निकल गये उसे पता भी नहीं चला। आज उसके चहरे पर गहरा संतोष था। क्योंकि आज उसकी नौकरी का प्रथम दिन था। वैसे पहले भी ड्यूटी की थी लेकिन वो आज जैसी न थी। ड्रेस पहिनकर जब अपने आपको दर्पण में देखा तो आश्चर्य हुआ वह कितनी बदल गई है। आज वह तो मनु नहीं रही, जिसका अंतमन अग्नि में सुलगता रहता था। आज वह अपने पैरों पर खड़ी है, स्वाभिमान से सिर उठाकर जी रही है।

एक दिन जब वह जल्दी जल्दी अस्पताल आ रही थी, कि अचानक एक मरीज पर नजर पड़ते ही चौंकी जो कोने में स्टचर पर बेहोश पड़ा था। अधेड़ महिला जो उसकी मां थी डाक्टरों से रो-रोकर कह रही थी—

डाक्टर साहब! मेरा बेटा है जल्दी में देखिये यह जगता क्यों नहीं है !" साथ में एक मंझोले कद की स्त्री थी रो रही थी, जो उसकी पत्नी थी।

मनु सब कुछ अनदेखा करती आगे बढ़ गई, लेकिन तभी अपने कर्तव्य को याद कर लौट आई। डाक्टरों से बात की। स्ट्रेचर को इमरजेंसी में शीघ्र लाने का आदेश दिया और उपचार शुरू कर दिया। आदमी ने नींद की गोलियां खाई थी अगर समय पर उपचार न होता तो शायद बचने की उम्मीद कम थी।

मनु ने रो रही सास-बहू से कहा—"खतरे की कोई बात नहीं समय पर उपचार हो गया है।" यह सुनते ही अधिक उम्र की महिला यानी उसकी मां ने उसे ढेर सारे आशीर्वाद दिये किन्तु पहिचाना नहीं। मनु ने तो उसे देखते ही पहिचान लिया था जिसके कारण उसे कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

डाक्टरों के पूछने पर "नर्स क्या तुम इसे जानती हो ? कोई पहिचान वाला है।

सुनते ही चौंकी ! अपने को सम्हाला बोली—

"नहीं।"

यह कहते हुये अपने अ तमन मे सुलगते विचारों को दबा लिया।
मरीज को दिन मे कई बार आकर देखा।

तीसरे दिन जब बेहोशी टूटी और आखें खाली तो अपने सामने नर्स की ड्रेस मे मनु को देखते ही चौंक पडा, जो पास के पलग पर लेटे मरीज को देख रही थी और दवा दे रही थी। तभी वह उसके पास आई। कि तु चन्दर को अपनी ओर देखते ही ठिठकी। अपने को सयमित किया और सामान्य लोगों की तरह दवा देती हुई आगे बढ गई।

आज मनु को इस ड्रेस म देख च दर बहुत खुश था साथ ही उसे अपने किये पर बहुत पछतावा था। इसी कारण दृष्टि उठा उसकी तरफ देख नही पा रहा था, उसे चोर नजरो से ताक रहा था। यह देख माँ ने कहा—

"बेटा! आज इसी की वजह से तुने नयी जिंदगी मिली है। पता नही और कितनी देर बाहर ही पडे रहता भगवान इसे सुखी रखे।

च दर माँ के आशीर्वादी वचनो को सुन चौंका—

'यह क्या? एक दिन इसी को कहा मातर मने इसे दुःख दिये त्यागा क्या? अधिक धन के लोभ म दूसरा विवाह किया, कि तु फिर भी सुख शांति नही मिली। मरी बुद्धि को क्या हो गया था मैंने इतनी बेवफाई क्या की? में कितना नीच हू जो इस मौत मे धकेल रहा था, कि तु इसी मुझे मौत के मुख स बाहर निकाला कितना अन्तर है, मुझम और उसम। सच, वह एक महान महिला है लेकिन म शुक्रिया कसे अदा करूँ म तो उसस बहुत छोटा रह गया आज मुझे अपने आप पर बहुत शर्म आ रही है यही सब सोचते हुये च दर की आँखें डबडबा गई और हृदय पश्चाताप की अग्नि म सुलगने लगा।

*

१०
औलाद

मानिकलाल तख्त पर मसनद के सहारे बैठे बडबड़ा रहे थे। अपने भाग्य को कोस रहे थे। अनगल प्रलाप कर रहे थे, कि—"आज इस नालायक ने मेरे ऊपर ही हाथ उठा दिया। काम कुछ करता नही, आवारा लडको के साथ हीरो बना घूमता रहता है। खाने-पीने को अच्छा-अच्छा चाहिए, नहीं तो पूरे घर का सिर पर उठा लेगा। हमारा तो कुछ ख्याल ही नही रखता। इन बेढगी हरकतो से तो मैं तग आ गया ।"

पत्नी की तरफ देखते हुए क्रोध से बोले —

"सारा कसूर तेरा है, तूने ही उसे सिर चढ़ा लिया है ? बिलि दया जो रो रही थी पति की यह दलील सुन सकते मे आ गयी। क्रोध मे पति को दोष देती हुई बोली —

"मैंने उसे सिर चढाया या तो आप भी उसकी सभी अच्छी बुरी बातो को मान जाते थे। डॉटा कभी नहीं। सारा तुम्हारे लाड़ प्यार का ही कारण है ।"

कहते कहते रोने लगी, बोली—

उसकी बुद्धि को न मालूम क्या हो गया है, अभी मुझे चेतावनी देकर गया है– "सारी जमीन जायदाद मेरे नाम कर दो। तुम बूढ़ी हो कभी भी मर जाओगी, फिर मुझे कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ेंगे। मैं झझट म *नहीं पड़ना चाहता मुझे क्रोध न दिलाना ।"*

"ऐसे नालायक बेटे से तो न होना ही अच्छा था। सच, अब नही सहा जाता। हे भगवान अब तो तू उठा ।" यह कहते सेठ मानिकलाल

थी आँखें भर आयीं। अब उन्हें अपने आप से ग्लानि हो रही थी, छड़ी हाथ में ले बाहर चल दिए क्योंकि अब घर में उनको दम घुटता सा प्रतीत हो रहा था। थोड़े समय में ही सब कुछ बदल गया। वह शरीर मन बेटा उसके विचार । जिस मन में जीने की अनेक अभिलाषायें थीं, कुछ करने की उत्कंठा थी, अब वह मन नीरस और वैरागी बन पलायन करना चाहता है कितना उदास हो गया हूँ।

सेठ अपनी धुन में सोचते, बड़बड़ाते, छड़ी के सहारे न जाने कहाँ जा रहे थे। सहसा एक मकान को देख ठौंके। अरे, यह तो वही मकान है जिसमें हरिओम मास्टर रहता था। कितना भला था, बेचारा। अपनी बीमार माँ का कितना ध्यान रखता था और एक मेरा मूरख बेटा। मैं भी तो अंधा बन गया था जो इसकी बातों का सच मान बैठा।

'हरिओम की उम्र यही कोई पैंतीस छत्तीस के बीच की होगी। लम्बा इकहरा बदन, सांवला रंग अनेक कठिनाइयों से गुजरा, मंझा सा मुख मंडल, शरीर सुडौल, नासिका पर प्रिय तेज चश्मा। कुर्ता पटलादार, धवलधौत, अधो वस्त्र और पैरों में स्लीपर सुसज्जित उसकी वेशभूषा थी।' कितना जमता था वह। लेकिन मेरे

अतीत की धुंधली स्मृतियाँ मेरे मस्तिष्क पर आने लगीं। मैं भी पुत्र मोह में अंधा बन गया था, तभी तो हीरा की बातों देख कि 'मास्टर हरिओम मुझे बहुत मारा पीटा है कालर पकड़ कर जोर से खींचा। देखो, यह भी फट गया रही सही बात उसके हालात और उसके साथियों ने बतलाई थी, कि आपको भी बुरा भला कहा है'। मैं भी कितना मूरख था कि सुनते ही तैश में आ गया—'क्रोध' में 'मास्टर को ढेर सारी गालियाँ भी दीं । हीरा के साथ मास्टर के इसी मकान में आया था पीछे बालकों की एक लम्बी भीड़ देखने वालों को लगा होगा कि वे भी उनके साथ युद्ध में शरीक होने जा रहे हैं।

मकान में जब मैं अन्दर गया था, तब मास्टर अपनी माँ के चरणों को दबा रहा था, जो कई माह से बीमार थी। बूढ़ी माँ का सारा काम मास्टर

ही करता था। मा के सिवा उसका परिवार म था ही कौन ? न जाने उसने विवाह क्यो नही किया था, था तो, कामदेव-के समान।

बडी भाग्यशाली थी बुढ़िया जिसका होनहार बेटा था, जो स्वय अपने हाथो मे दवा पानी पिलाता, पैर, माथा दबाता, खाना खिलाता। कितनी देखभाल करता था मा की। एक मेरा बेटा, जिसने बुढ़ापे म जीवित रहना मुश्किल कर रखा है।

सुना था, कि बूढ़ी मा अपने बेटे को मेरे जाने से पूर्व, ढेर सारे आशीर्वाद दे रही थी। 'तू! खूब फल फूल तेरी तरक्की हो तू बड़ा आदमी बने।' आशीर्वाद की बेला म ही म सेना के साथ अन्दर तेजी से घुस गया था और जोर जोर से चीखा था — 'तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे बेटे पर हाथ उठाने की। मैं देख लूँगा, तुझे। जो तू अपने आप को नवाब समझे हैं दो कौड़ी का मास्टर मेरा दिया ही खाता है और मुझी से नमक हरामी। अब तुझे स्कूल आने की जरूरत नही, समझा।'

मैं तो क्रोध के आवेग म न जाने क्या २ बोल गया था, लेकिन मास्टर धीर गम्भीर ही रहा। मुझे याद है उसने मधुर और धीमी वाणी म इतना ही कहा था— 'सेठ! मैंने नही मारा, यह झूठ बोल रहा है। इतना विश्वास न करो इस हीरा पर, कही यह नकली न निकल जाए।'

मेरी तेज आवाज के सामने उसकी आवाज दब सी गयी थी कितना घमंड हो गया मुझे छि मन उसकी बीमार मा का तनिक भी ख्याल न किया, कि इस बीमार पर क्या असर पड़ेगा। मेरी बुद्धि भी कैसी भ्रष्ट हो गई थी। यह सोचते पश्चाताप के दो अश्रु नेत्रो से ढुलक पड़े।

चारपाई पर लेटी बूढ़ी बीमार मा ने जैसे ही सुना कि उसके बेटे को निकाल दिया है, सुनते ही एक सदमा सा पहुँचा और हमेशा के लिए आँखे बन्द कर ली थी। शायद उसी का शाप मुझे लगा है कैसा लगा होगा मास्टर और उसकी बीमार मा को ? आज मेरा हृदय इस बात का महसूस कर रहा है। अकेले बैठ अपने दुर्भाग्य पर आँसू जरूर बहाए होंगे। कितना स्वाभिमानी था वह। उसके बाद फिर उसे इस गाव म कभी नही

देखा। बाद में पता चला कि सारा कसूर औलाद का ही है जो पढ़ता तो था नहीं, स्कूल में मारा पीटी करता, किताबें फाड़ता तथा सिलेटें तोड़ता। मास्टर ने उसे डाँटा जरूर था, मारा नहीं। यह सब आवारा लड़कों का एक रचा नाटक था, जिसे मैं काश म समझ पाता। उसकी शैतानियों पर अंकुश लगा लेता तो आज यह दिन न देखना पड़ता।
चौधरी बाबू ने एक बार कहा था– "सेठ आपके बेटे का मन पढ़ने लिखने में बिलकुल नहीं लगता। घर से तो आप जबरदस्ती भेज देते हैं, किन्तु मास्टर की नजर बचाते भाग जाता है। सारा दिन नदी के किनारे बैठा पत्थर फेंका करता है। पेड़ों पर कूदता फाँदता है, डालियों पर लटकता है, झूला झूलता है, पतंग उड़ाता, गिल्ली डंडा खेलता रहता है। छुट्टी होते ही बस्ता लिए लौट आता है। तुम समझते होगे बेटा बहुत पढ़ लिख कर आ रहा। मजे की बात तो यह है, कि वह कई दिनों से स्कूल ही नहीं गया। आवारा लड़कों के साथ कुश्ती लड़ता है, उन्हें पत्थर मारता है ।"

बटन क्यों टूटते थे ? कपड़े क्यों फटा करते थ ? किताब क्यों गुम होती थी ? स्लेटें क्यो टूटा करती थी ? "मैंने और बिंदियाँ ने क्यों नहीं पूछा कि यह सब कैसे होता है ? क्यों नहीं डाँटा-मारा ? क्यो नहीं यह जानने की कोशिश की, कि यह पढ़ने मे कैसा है नहीं, सारा दोष हमारा है। हमने उसे जरूरत से ज्यादा लाड प्यार दिया सभी सुख सुविधायें दीं, जिसका परिणाम यह निकला कि ।" मैं तो उसका पिता था। मुझे चाहिये कि मैं उसकी उद्दंडता पर कड़ी नजर रखता। लेकिन मैंने भी अपने फर्ज को पूरा कहाँ किया। वह तो 'माँ' थी उसके सीने में माँ का दिल था। मैं तो एक पुरुष था मेरे अन्दर एक बाप का दिल है, जो अपना फर्ज पूरा नहीं कर पाया, सिवाय लाड प्यार के आराम के । इतने ही से बाप का कर्त्तव्य पूरा नहीं होता। औलाद म अच्छे संस्कार, दया, प्रेम, सहानुभूति, सेवा, त्याग आदि गुणों को ढालना भी जरूरी है।

आज मैं समझा कि औलाद म इन गुणों के विकास के लिए माता-पिता को पहले अपने अन्दर विकसित करने होते हैं। तभी तो सीख पाती हैं।

मास्टर को डांटकर मैंने ठीक नहीं किया। इससे तो वह निडर और उद्दण्ड बन गया था। उसे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया था, कि "पिता के हाथ में ताकत है, जो मेरे कहने से सब कुछ कर सकते हैं ? इसी कारण आये दिन बखेड़ा खड़ा करता था।

अतीत के चित्र मानस पटल पर उभर रहे थे। आज उनका हृदय क्षोभ से भरा है। जिन बातों पर अभी तक ध्यान ही नहीं दिया था, वही बातें आज अनायास मस्तिष्क में कौंध रही हैं और बाहर आने को बेचैन हैं।

"याद है, मानिकलाल ! मास्टर प्रभुदयाल के हाथ की हड्डी कैसे टूटी थी।"

"तेरे कारण, तेरे लाडले बेटे के कारण।"

तुझ से वो डरता था, तेरे बेटे को पढ़ाने से कतराता था। दिनादिन उसकी शैतानियाँ बढ़ती जा रही थीं उस दिन तीन टांग वाली कुर्सी भी तो उसी ने जान बूझ कर रखी थी मास्टर प्रभुदयाल बैठते ही गिर पड़े। उनके हाथ की हड्डी टूटी पलास्टर चढ़ा। महीनों तक हाथ सही न हो पाया और तूने ! सारा दोष मास्टर का ही बताया, अपनी औलाद से कुछ न कहा। मास्टर हाथ म पलास्टर चढ़ाये घर म बैठ गया, तूने कभी जाकर देखा, नहीं, — उसे भी निकाला — — क्यों ? — — क्योंकि तू स्वार्थी और घमंडी था। मानव स प्रेम करना तूने सीखा ही नहीं, आज तू, औलाद मे मानवता खोज रहा है। जरा अपने जेहन म झाक कर तो देख ?

चलते चलते अब वह थक गय। कदम लड़खड़ाने लग। जरा रुक कर चारो ओर देखा तो थोड़ा चैन हुआ, क्योंकि वह अपने बगीचे के पास आ गये थे। ओठो पर मुस्कान दौड़ी। — — कोई समय था जब वह रोज यहाँ तक घूमने आते थे, थकान का न तो नाम तक न होता था, किन्तु आज ।

पूरा बगीचा रंग-बिरंगे फल फूलों से लदा रहता था — — आम, अमरूद, अनार, पपीता, केला, इमली, नींबू और लम्बे-लम्बे देवदार के पेड़। जो रितु के अनुसार हरे भरे बने रहते थे। खुराकों की कमी नहीं, जो खुद व

कुछ समय आने पर उग आती थी ; सेम, मटर, रसभरी, अंगूर, लौकी, तोरई जैसी अगिनत थी जो किसी मजबूत वृक्ष का सहारा लिये हुये उसके आंचल में पल्लवित होती रहती थी। लेकिन —— वो सब न जाने कहाँ खो गया। बस, अब बूढ़े वृक्ष ही दिखलाई दे रहे हैं और चारों तरफ उगी ऊँची ऊँची घास। ——— समय के साथ सभी मेरा साथ छोड़ गये ॥

उन्हें याद आ रहे है, वो दिन जब विदिशा से विवाह हुआ था और दहेज मिला लम्बा चौड़ा। यह बगीचा, आलीशान कोठी, दुकान नौकर, चाकर सभी कुछ विदिशा के बाबू ने स्वेच्छा से दिया था। कुछ समय तक तो वह हमारे साथ रहे फिर चल बसे। सारी जमीन जायदाद विदिशा को मिल गई और मेरी गणना धनवानों में होने लगी थी ——— कितने सुखी के दिन थे। सुन्दर पत्नी को पाकर मैं फूला नहीं समाता था ——— आसपास कैसा दबदबा था। नौकर चाकरों पर रौब था; किसकी थोड़ी सी भी गलती देखी उसी को जोरदार डांट-फटकार लगाई। मजाल थी कि कोई चूं भी कर जाये। ——— अब ——— सभी खिल्ली उड़ाते हैं, हँसते हैं, इस औलाद के कारण।

शादी के कुछ वर्षों में जब कोई औलाद नहीं हुई तब दोस्त परिवार नियोजन कह प्रशंसा करते थे जब लम्बा अर्सा बीत गया किन्तु कोई भी सन्तान नहीं हुई तब वही दोस्त मजाक उड़ाने लगे थे। उन दिनों मन में यही विचार जोर पकड़ने लगा था कि दूसरा विवाह क्यों न कर लिया जाए कुछ समय बाद यह विचार भी समाप्त हो गया था, क्योंकि जिस धन का मैं अपना समझ रहा था वह मेरा नहीं विदिशा का था। मैंने सन्तोष किया कि जब एक से नहीं हुई तब क्या गारंटी दूसरी से नसीब हो। भाग्य में होगी तो इसी से मिल जायगी। तभी से अपने को भाग्य के सहारे छोड़ दिया था।

बाकी तो औलाद के न होने से कितनी दुविधा ग्रस्त, उदास और मुरझा गई थी दिन भर औलाद के बारे में सोच, सभी देवताओं के चित्रों के सम्मुख खड़ी हाथ पसार जुनय विनय करती——

'हे भगवान तू मुझे अधिक नहीं एक ही औलाद दे दे।'

औलाद पाने के लिये जिसने जो कुछ बतलाया उसने वही किया। व्रत पूजा, तंत्र मंत्र, गंडे–तावीज, बाबाओं की धूना – – – न जाने क्या क्या किया था। मंदिरों में जाकर मत्था टेका, मनौती भी मांगी– – –इसी कपूत के लिये। अगर ऐसा मालूम होता तो – – –।

कितना समझाया था कि हम बच्चा गोद ले लेते हैं, लेकिन नहीं मानी। कहती थी—

"दूसरा खून' दूसरा होता है और अपना अपना ही।"

अब भुगतो अपने खून का।

दोपहर का समय था सेठ मनिकलाल अपने को थका सा महसूस कर रहे थे। कुछ देर आराम करने की दृष्टि से आम के वृक्ष के नीचे बैठ गये। छड़ी को एक तरफ रख जगह को हाथ से थोड़ा साफ कर आलती पालती लगा बैठ गये। ज्योंही उनकी दृष्टि वृक्ष के ऊपर गई तो वे सोचने लगे, अब यह भी मेरी तरह बूढा हो गया है। एक समय था जब यह बौर से लदा रहता था। मैं पहले भी यहाँ अनेक बार आया लेकिन ऐसा नहीं था। सब कुछ बदल गया – – –उस दिन – – – रोज की अपेक्षा तेज हवा चल रही थी पेड़ से बौर चारों ओर उड़ रहा था। वातावरण में एक विशेष प्रकार की गंध फैली थी जो आम पर बौर आने का संकेत कर रही थी। – – –सामने दाड़िम भी फल फूलों से लदा था। केला अधिक बोझ के कारण झुक सा गया था, जो ऐसा प्रतीत होता था, कि आम वृक्ष को प्रणाम कर रहा हो – – – और वो – – – नीम का पेड़ भी निबौरियों से लदा हुआ था। उस समय वातावरण में एक विशेष उल्लास छाया हुआ था। – – – नई–नई कोंपलें आ रही थीं, पुराने पत्ते झड़ रहे थे, सब कुछ सुखद था। किंतु – – किंतु आंतरिक मन विकल था। उस समय हरे भरे वृक्ष मेरे सूने हृदय का मुँह चिढ़ाते से प्रतीत हो रहे थे बिना औलाद के मुझे जीवन निस्सार लगता था। अपने आप से घृणा सी होती जा रही थी। इतनी धन दौलत इकट्ठी करने से क्या फायदा जब उस धन का उपयोग करने वाला न हो।

उस दिन ओंठ सूख गये थे, गला शुष्क हो गया था। हवा तेज चलने के बाद भी शरीर पसीने से भीग गया था। – – – उस समय

ऐसा लगा था कि साँस कुछ क्षणो में रुक ने वाली है। तब रामू ने आकर पानी पिलाया था। मैंने एक ही बार मे सारा पानी गटगट कर पी डाला था रामू मेरी स्थिति का भाँप गया था बोला —

"क्या बात है हुजूर आज उइकी तबीयत ठीक नहीं लागत।"

मैंने अपने मन की पीडा दबाते हुये कहा था —

"कुछ नहीं हुआ है, मुझे सब ठीक से है।"

सुनते ही ऐसा लगा था कि किसी ने मेरी दु खती नस पर हाथ रख दिया हो। मुख से कुछ कह न सका। एक नजर रामू पर डालते हुए सोच मे पड गया था। तभी रामू का दुखी स्वर सुनाई दिया—

"मालिक की किरपा है। हुजूर ! घरवाली को पूरा समय है, कभी भी बचवा हुई सकत है। हाथ मे कुछ नाहीं। — — — कुछ रुपया धेली मिल जात तो अच्छो था।"

"मालिक ! बहुत परशान हूँ, बहुत तंगी मे हूँ। बचवा को दूध, घरवाली का जचकी का खरच, थोडी मेहरबानी हो जात तो अच्छो हो जाय।"

मन मे आया था कि मना कर दूँ। क्या बच्चा पैदा करते समय मुझसे पूछा था ? जब पास मे रुपया नही तब यह झमेला क्यो मोल ले लिया, लेकिन जबान ऐसा कुछ न बोल सकी। अन्तमन ने धिक्कारा—'नही, मनिक लाल ! ऐसा नही सोचते। गरीब की मदद कर, जो तेरा फर्ज है। देख तुझे आत्मिक सुख मिलेगा ।" उसी समय सौ सौ के दो नोट जेब से निकालकर उसकी तरफ बढा दिये थे, जिसे देखते ही रामू के नेत्र प्रसन्नता से भर गये थे मने जब उसके चेहरे पर दृष्टि डाली तो पाया कि वह मुख से तो कुछ न बोल पाया किंतु नेत्र बहुत कुछ कह रहे थे। पैर छूकर जब जाने लगा था तब मैंने ही उससे कहा था—"सुन रामू ! और की जरूरत हो तो और माँग लेना, सकोच न करना।"

थोड़े समय पूर्व जो मन अत्यन्त दु खी हो रहा था, वही बाद म हल्कापन महसूस कर रहा था, तब मन मे यही विचार आते थे "ईश्वर का यह कैसा न्याय है ? एक वह जिसके पास धन सम्पदा है, लेकिन उपयोग करने

वाली औलाद नहीं, जिसके लिए वह तरस रहा है, हाथ जोड़कर माँग रहा है किन्तु ईश्वर । दूसरी तरफ जिसके यहाँ खाने पीने के लाले हैं, जो सन्तान को बोझ समझ रहा है तब भी ईश्वर उनके न चाहने न माँगने पर भी दे रहा है। वाह रे ईश्वर ! तेरी भी अजीब लीला है।

इस बेवकूफ औलाद को पाने के लिये मैंने बीस वर्षों तक न जाने कितना रुपया खर्च किया होगा याद नहीं। उसे भी शहर ले जाकर ऊँचे से ऊँचे डॉक्टर को दिखाया, आप्रेशन भी कराया। किन्तु कोई लाभ नहीं। डॉक्टरों ने अन्त में यही कहा—अब तो भगवान पर विश्वास और धैर्य रखो ।

उन दिनों बिन्दिया का मुख भी कितना फीका पड़ गया था। कितनी मायूस दिखलाई देती थी। उसके जीवन में कोई अभाव नहीं, किन्तु औलाद का मुख देखने की लालसा ने उसे कितना दुर्बल बना दिया था। वैसे वह सुशील, सेवा-परायण और साध्वी स्त्री है। भगवान भी उसके साथ कैसा मजाक कर रहा है। चेहरे से थकी-थकी, बुझी-बुझी सी दिखलाई देती थी। जिन आँखों में स्वर्ण सी चमक रहती थी, वही नीरस तथा भावशून्य दिखलाई देने लगी थीं। बीमार भी अधिक रहती वैद्यजी ने कहा था—'सेठानी की एक ही बीमारी' औलाद का न होना। यदि एक भी औलाद हो जाये तो सब बीमारियाँ आप ही दूर हो जायेंगी ।"

मैंने भी औलाद की आशा छोड़ दी थी क्योंकि अवस्था पैंतालीस से ऊपर हो गई थी शायद उस समय मेरी इच्छायें कुण्ठित हो गई थीं।

विधाता का यह कैसे चमत्कार कि उस दिन बिन्दिया ने खाना खाया और कै की। जी कितना घबराने लगा था। वैद्य जी ने दवा भी दी किन्तु लाभ नहीं हुआ। तीन चार दिनों तक जब यही क्रम चला तब बूढ़ी दादी गुलाब से रहा न गया और वह कहने लगी—

"बेटी ! एक बात कहूँ, बुरा न मानें तो।"

"कहो काकी।"

"बेटी ! भगवान की दया से तू माँ बनने वाली है।"

सुनते ही विदिया खुशी म उछल पडी थी । हाथ का बतन खुशी क मारे छूट गया था । एक छण के लिय काना पर विश्वास ही नहीं हुआ था ।

बाद म उसे अपनी गलती का एहसास भी हुआ था । वह इतनी बड़ी हो गई, लेकिन इतनी भी समझ नहीं । इस बात की तो उसे पूव ही समझ जाना चाहिये था ।

उन दिनों कितनी खुश रहती थी, वो और मेरी खुशी का भी पारावार नही था । कितना ध्यान रखता था उसका । क्या खाती है ? क्या पीती है ? कैसा पहनती है ? किस तरह रहती है, आदि मे मेरी दिलचस्पी बढ सी गई थी । बच्चे के ज म से कसे खुश थे हम दोनो क्योंकि हमारी वर्षों की साध पूण हुई थी । वीरान मन मे उल्लास छा गया था, जीवन म उमग और उत्साह भर गया था । पूरे गाँव मे दिल खोलकर मिठाइयाँ बाँटी थी, बधाइयाँ गाई थी । कितनी उम्मीद के साथ इसका नाम हमने हीरालाल रखा था । हम क्या पता था, यह हीरा नही लोहा है कितना लाड-प्यार और नाजो नखरों के साथ लालन पालन किया था । हमारी समस्त इच्छायें जम पूण हो गइ थी । सुदर से सुदर और मँहगी स मँहगी चीजें खरीदकर दी थी । क्या कमी रखी थी, इस ? जिसका फल आज हम दे रहा है । कहता है –

तुमन जिदगी मे किया ही क्या है । कुछ नहीं, मुफ्त क धन पर ऐश किया है । य हवेली, बगीचा, दूकान आदि सब सम्पत्ति मेरे नाना की है तुम्हारी कुछ नही । मैं इस घर म तुम्हारी बात सुनना और शकल देखना नही चाहता अपने पास अम्मा को ही रखूँगा । अकल म उससे जायदाद अपने नाम करने को कहता है । धमकी देता है, नहीं तो परिणाम अच्छा नही होगा ।

देखता हूँ क्या परिणाम होगा ? क्या इसी दिन के लिये पाल-पोस बड़ा किया था ? मन म आता है इसको खूब पिटाई लगाऊँ नहीं मैं बूढा हूँ मनुष्य बुढ़ापे के सहारे के लिये ही कितनी उम्मीद लेकर पुत्र को

पालता है और औलाद से   । गलती हमारी ही थी जो हमने उसे इतनी छूट और प्यार दिया। वो तो अवारा लडको की सगति म ही रहता था, मालूम होने के वाद भी अकुश न लगाया। वास्तव मे ज म देना सरल है, किन्तु बुढापे की औलाद को पालना कठिन। विद्वानो ने सच ही लिखा है—

"बीज कितना भी अच्छा हो, भूमि अच्छी नही, पौधा कभी नही उग सकता। वशानुक्रम कितना भी अच्छा हो, वातावरण अच्छा नही तो बालक योग्य नही बन सकता।"

चारो ओर अ धकार छा रहा था और वो अभी तक यही वठे हैं। समय का उ हें कुछ पता ही नही चला। सोचा, घर मे कही वो दुष्ट आकर उस बुढिया को तग न कर रहा हो, चलना चाहिए। ऐसा सोच, झटपट अपनी छड़ी सम्हालते उठ खडे हो गये। वद्ध सेठ मानिकलाल के कदम खट-खट करते हवेली की ओर ही पड रहे थे।

११

लक्ष्मी जी पृथ्वी पर

वैकुण्ठ मे रहते और पृथ्वी के समाचार सुनते-सुनते लक्ष्मी जी का मन दुखी हो गया, सोचा स्वास्थ्य के लिए थोडा घूमना फिरना, स्थान परिवर्तन करना उत्तम है। मन में विचार आया कि पृथ्वी पर चलकर देखना चाहिए कि पृथ्वीवासी क्या कर रहे हैं ? उनकी कैसी कार्य प्रणाली है ? कैसा कारोबार है ? इन विचारो के आते ही लक्ष्मी जी ने अपना रूप, रंग, पहनावा, केश सज्जा आदि सभी में परिवर्तन किया और वह उमग उल्लास के साथ पृथ्वी वासियो से मिलने के लिए चल दीं।

पृथ्वी पर दीपावली की तैयारियां की जा रही थीं। घरो को, ऊँचे-ऊँचे मकानो को, बगलों को, बहुरगे ढग से लीपा पोता गया था। महीनो पूर्व से ही इसकी तैयारी मे स्त्री पुरुष बच्चे बूढ़े सभी लगे हुए थे। घरो को पूर्ण रूपेण साफ स्वच्छ कर बड़े इतमीनान से करीने के साथ प्रत्येक वस्तु को यथायोग्य स्थानो पर रखा गया था। यह कार्य कुछ अपने हाथो से कर रहे थे और कुछ अपने अनुचरो से करवा रहे थे।

बड़े मकानो के बाहर बने बगीचे भी साफ सुथरे दिखलाई दे रहे थे। प्रत्येक पौधे को सु-व्यवस्थित ढग से रोपा गया था, जो सुन्दर दिखलाई दे रहा था। मकानो के दरवाजे, खिड़कियां सभी चमकते दिखलाई दे रहे थे, जो बहुरगी पोशाकों को पहने हुए थे। बगलो के गेट भी रंग किये सुन्दर दिखलाई दे रहे थे।

आज सभी व्यस्त थे। किसी को भी फुर्सत नहीं थी। कोई अपने घर को रंग बिरंगे चमकीले फूलों से सजा रहा था। कोई कागज की रगीन झालर लगाने में व्यस्त था। कोई छोटे छोटे-बल्बो से बनी झालर बनाने

मे जी जान से लगा था और कोई लगाने मे। कुछ बाजारो से नई नई आक पक चीजें ला ला कर घरो को सजाने मे लगे थे। बच्चे बूढ़े आज सभी प्रसन्न दिखलाई दे रहे थे, क्योकि आज दीपावली है। घरो मे अनको प्रकार के पकवान बनाये जा रहे थे, जिनकी सुग ध वातावरण मे चारो तरफ फल रही थी। घरो म गृहणिया अपने अपने कार्यों म तल्लीन थी जो उल्लास उमंग के साथ अपना कार्य कर रही थी।

आज सभी के चेहरे प्रसन्नता मे भरे दिखलाई दे रहे थे। सभी को यह था कि अधिक स अधिक खाद्य सामग्री सजोई जाये, क्यांकि रात्रि मे लक्ष्मीपूजन करना है, प्रसाद चढाना है, वह भी नियत समय पर। कही समय हाथ स निकलने न पाय। आज लक्ष्मी पूजा म किसी भी प्रकार की कमी न रह जाये। वे हमसे नाराज न हो जावें।

समय बढता गया, सध्या की वेला आई। बच्चे शाम स ही सज सवरे घूम रहे थे। अपने मित्रो मे हाथ मिला रहे थे। कह रहे थे—

"आज हम लक्ष्मी की पूजा करगे। घरो को बल्वो से सजायेंगे। देखना आज हमारा घर सबसे सुन्दर दिखलाई देगा। लक्ष्मी जी हमारे घर पर ही आयेंगी।"

प्रत्येक बच्चा अपने घर लक्ष्मी के आने का दावा कर रहा था। ये बच्चे थे अमीर घरो के।

अधेरा होते ही बडे बडे बगले रग बिरगे प्रकाश से जगमगा उठे। बाहर झालर, बल्व शोभित थे, आहाते म बडे बड बल्व या ट्यूबलाइट जल रही थी। कमरा म एक हजार के बल्व जल रहे थे। अमीरा के घर रात्रि मे भी दिन निकला हुआ था।

एक तरफ झुग्गी झोपडियाँ थी, जिनमे निम्न वग वास करता था। कुछ झोपडियाँ ऐसी थी जिन्हें देखकर एसा लगता था शायद इन्ह दीपावली के आने का आभास ही न हुआ हो।

लक्ष्मी जी वृद्धा का रूप बनाये लहगा सलूका पहिने बगल म पोटली दबाये कपकपाते कमजोर हाथो म लाठी को थाम चल रही थी। सहसा,

सामने नववधू सदृश सजी कोठी को देख ठिठकी। । सोचा, पहले इसी मे चलकर दखना चाहिए कि यह मेरा किस तरह स्वागत करता है। यह तो मेरा परम भक्त है। 'जरा, चिलकर देखूँ तो

वृद्धा कोठी को निहारने लगी। गेट पर फौजी ढग सी सजा सवेरा बना नौकर बोला—

'ऐसा क्या देख रही है ??'

वृद्धा बोली — 'इस जगमगात मकान को।'

नौकर हँसते हुए बोला — यह कोठी है, कोठी। मकान नही।'

वृद्धा बोली— 'किसकी है भय्या ?'

'जानती नही, सेठ लक्ष्मीमल की है जिनका एक्सपोट का धधा है।' चल परे हट, सठ जी आते हा होगे।

वृद्धा बोली — बेटा आज रात मुझे यहाँ रुकने को जगह मिल जायेगी।'

'नही नही यहा काई जगै वगै नही है, आगे बढ।'

अ दर से सेठानी का स्वर गूँजा—

'अरे गोविन्दा किसस बात कर रहा है।' काई बुढिया हैं मालकिन। रातभर रुकना चाहती है।'

यह कोई धमशाला समन रखी है कि ऐरा गैरा सभी चले आयें। अरे डांट कर भगा। मेरा लक्ष्मी पूजा का समय निकला जा रहा है।'

वृद्धा अनुनय विनय कर रही थी —

"नही नहा भगाओ नही — — —।"

पीछे से सेठ की रोशनी करती हार्न बजाती कार आई। गेट पर खडी बुढिया को देख सेठ क्रोधित वाणी मे बोले —

'ईडियट' दिखाई सुनाई नही देता अपना घर समझ रखा है। गोविन्दा भगा इस बुढ़िया को।'

वृद्धा लक्ष्मी अपने भक्त का देख मन ही मन मुस्कुराती हुई आगे चल पडी।

पास ही जगमगाते बगल का दख रुक गयी। नौकर स पूछा —

"ऐ भैय्या यह किसका मकान है।" बगीचे में बैठे डॉक्टर साहब बोले–

अरे आज छुट्टी वाले दिन भी चैन नहीं। "जाओ यहाँ से कल अस्पताल में ही मिलना।"

'नौकर के कहने पर– यह रात भर रुकना चाहती है।'

सुनते ही डाक्टर साहब का पारा चढ़ गया और बोले–

रुकने को अस्पताल या मरघट में जाओ! यहाँ किसी को कोई जगह नहीं । मेरा मूड आफ कर दिया अभी मुझे लक्ष्मी पूजा भी करनी है।"

वृद्धा लक्ष्मी मन ही मन मुस्कुराती भक्त को आशीर्वाद देती आगे चल पड़ी। अभी वह थोड़ी आगे ही चल पाई होगी कि एक घर से जोर जोर से रोने की आवाज आ रही थी। वृद्धा चकित हुई और खड़ी हो गई। अदर से आवाज आ रही थी–

'निकल मेरे घर से! हराम का खाती है ।'

कोई स्त्री रोती आँचल से आँसू पोंछती जा रही थी। उसके जाने के बाद लक्ष्मी जी ने युवती का वेष बनाया। बाल खुले साड़ी मैली जिसम खिड़कियाँ बनी हुई थी। बगल में पोटली दबाये उसी घर पर जाकर दरवाजा खटखटाया – –

वकील साहब ने दरवाजा खोला–सामने खड़ी युवती को देख मुस्कुरा दिये। युवती के शरीर को निहारते हुये बोले–

"कहिये ?"

युवती के कहने पर –

"मुझे रात भर रुकने को जगह चाहिये, सुबह होते ही मैं चली जाऊँगी।"

सुनते ही वकील साहब चहके, बोले –

'क्यों नहीं क्यों नहीं। यह आपका ही घर है। एक रात क्या, जितनी रात रहना चाहो, रहो।'

अन्दर से पत्नी का स्वर सुनाई दिया–

"कौन है ? किससे रात मे रुकने का आग्रह कर रहे हो।"

वकील साहब कुछ बोलें, इससे पूर्व ही उनकी श्रीमती जी आ गयीं। सामने सु दर स्त्री को देख रोष स वकील साहब की ओर दृष्टि डालते हुये – – जो युवती को ललचायी नेत्रा से देख रहे थे। बोली–

"ऐ कुलक्षणी निकल यहां से। मेरे पति पर डोरे डालने आयी है। यह कहते ही पति को अ दर धकेला झट से दरवाजा ब द कर लिया।"

युवती रूप मे लक्ष्मी जी वकील की वासनात्मक दृष्टि को और पत्नी की शकालु दष्टि का अच्छी तरह समझ रही थी। साचा अब झोपडिया म चलकर देखू कि वहां क्या हो रहा है।

वृद्धा रूप बनाय बगल मे पोटली और लाठी को लिय उसी दिशा म चल पडी। अभी वह कुछ दूरी ही तय कर पायी की एक गहन अधकार म डूबी झोपडी देख रुक गयी। अ दर से बच्चा के रोन का स्वर सुनाई दे रहा था बाहर से वृद्धा लक्ष्मी बोलीं–

"क्यो, आज तो दीवाली है, फिर यह अधेरा क्यो ?"

बाहर से किसी स्वर को सुनते ही टूटी चारपाई पर महीनो से बीमार पडा पुरुष अपनी स्त्री से बोला–

"दीपक जलाओ! देखो दरवाजे पर मेहमान खडा है।"

स्त्री बोली–

"तेल वेल कुछ तो नही है, क्या जलाऊँ ? हम गरीबा के नसीब म लक्ष्मी पूजा कहाँ ?"

वद्धा बोली–"देखो, डिब्बे मे थाडा बहुत तेल होगा।"

स्त्री न चाहते हुये उठी। डिब्बे को हिलाया तो उसम तेल होने का सदेह हुआ। चट से दो तीन दीपक जलाये। मन मे सोचा अब तक बेकार ही अधेरे मे बठी रही।

दीपक का प्रकाश होते ही टूटी चारपाई पर महीना से लेटे बीमार पुरुष ने अतिथि को बुलाया, बैठन का कहा। कहने के साथ स्वय भी उठकर बैठ गया। स्त्री पति को बैठत देख दग रह गयी। जो छ माह से अपाहिज

बना हुआ था, जिसके लिए उठना भी दुष्कर था, वही आज बिना किसी सहारे के अपने आप उठ बैठा।

वृद्धा ने पूछा—"क्या तू क्या लेटा था।"

पुरुष ने बतलाया— 'माँ मैं छ महीने से बहुत बीमार था। रुपया पैसा पास न होने के कारण इलाज न करा सका और बीमारी आगे बढ़ती गई — — —।

बच्चे जो अभी तक विस्मय के साथ यह सब दीन नेत्रों से देख रहे थे, अब भूख से व्याकुल हो रोने लगे। स्त्री उन्हें चुप कराने का विफल प्रयत्न कर रही थी। बच्चे थे कि रोना छोड़ ही नहीं रहे थे।

वृद्धा सब समझ रही थी, फिर भी पूछा—'बेटी! बच्चे क्यों रो रहे हैं?'

स्त्री अतिथि के सम्मुख अपनी गरीबी को बतलाना नहीं चाहती थी, लेकिन विवश हो उसे कहना ही पड़ा। बोली—

'क्या बताऊँ, घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है, इन्हें क्या खिलाऊँ। कल रात मुझे भी तेज बुखार आ गया था। कई दिनों से पेट भर खाना न खाने के कारण शरीर में जान नहीं रही। इसीसे सभी घरों का काम छूट गया।"

ठंडी साँस लेकर, आँखों मे आँसू भर बोली—

माँ! परमात्मा ने हमारे भाग्य में सारी गरीबी को भर दिया है। लक्ष्मी जी भी हमसे रूठ गई हैं। अब न जाने कौन से दिन ।" यह कहते कहते वह रो पड़ी। वृद्धा रूप में लक्ष्मी जी को हृदय में दुःख हुआ क्योंकि पृथ्वी के बारे मे सूचना लाने वाले उनके देवताओं ने ही उन्हें भ्रमित रखा — — — सही सूचनायें नहीं थी।"

वृद्धा बोली

बच्चो! मेरे पास आओ मैं तुम्हें खाना खिलाती हूँ।' यह कहते हुये उसने अपनी पोटली खोली और उसमें से मोटी मोटी गेहूँ चने की एक एक रोटी गुड़ के साथ तीनों बच्चों को दी।

रोटी मिलते ही बच्चे खुशी से उछल पड़े और जल्दी जल्दी खाने लगे

एक एक रोटी वद्धा ने स्त्री और पुरुष को भी दी किन्तु वह औपचारिकता दिखलाते हुये इन्कार करने लगे। आग्रह करके पर खाने लगे रूखा सूखा भोजन सभी को पकवानो मिष्ठानो से अधिक अमत तुल्य लग रहा था। सभी बडे प्रेम के साथ खा रहे थे एक एक रोटी म सभी के पेट भर गये तथा मुख पर सतोष का भाव झलक रहा था। सभी आपस मे अनेकों बातें करते रहे - - - ।

बातें करते करते पुरुष अपने म यह महसूस कर रहा था कि वह स्वस्थ्य है, बीमार नही इसी तरह स्त्री भी अपने आप म शक्ति और स्फूर्ति का अनुभव कर रही थी। वद्धा उन गरीब स्त्री पुरुषो के सरल उदार हृदय को समझ रही थी, कि उनका हृदय अतिथि के लिये कितना प्रम से भरा है।'

पुरुष बोला —

''माँ! हम भूल न जाना।'

स्त्री बोली —

'अम्मा! हमारे घर फिर आना वैसे हम गरीबा के पास है ही क्या ! यह कहते उसके नेत्र सजल हो गये।

पुरुष ने भी वृद्धा स अनेको बतें की। कहाँ की रहने वाली हो ? – – घर मे कौन कौन हैं ? – – – कहाँ जा रही हो – – – ?

वृद्ध रूप म लक्ष्मी जी ने सोचा –

'अब मझे अमीरा के महलो को छोड झोपडो को सजाना होगा।'

प्रात काल सभी ने देखा कि वृद्धी अम्मा नही हैं लेकिन उनकी पोटली रखी है। सोचा यही कही घूमने गई होगी। यह विचार कर सभी अपन अपने कार्यों म लग गये। लेकिन बहुत देर तक न आने पर विवश हो पोटली को खोल लिया। पोटली के अन्दर का दृश्य देखकर विस्मित रह गय। अपार लक्ष्मी । अन्त मे सोचने के बाद उनकी समझ म यही आया की रात्रि म मेहमान बनकर आई हुई वृद्धा माता कोइ सामान्य स्त्री न होकर साक्षात् 'लक्ष्मी' थी।